UPSC Mains 2025

हल प्रश्न पत्र

सामान्य अध्ययन पेपर-I

C-171/2, Block-A, Sector-15, Noida

641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi

21, Pusa Road, Karol Bagh New Delhi

Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh

Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

Burlington Arcade Mall, Burlington Chauraha, Vidhan Sabha Marg, Lucknow

12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

E-mail : care@groupdrishti.in

Phone: +91-87501-87501

प्रश्न 1. हडप्पाकालीन वास्तुकला के विशेष पहलुओं की चर्चा कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- हड़प्पा सभ्यता और आरंभिक नगरीय वास्तुकला में इसकी महत्ता का परिचय दीजिये।
- हड़प्पा वास्तुकला की प्रमुख विशेषताओं, जैसे- नगर नियोजन, प्रयुक्त निर्माण सामग्री, जल-निकासी प्रणाली तथा महत्त्वपूर्ण संरचनाओं पर चर्चा कीजिये।
- वास्तुकला की धरोहर और एक उन्नत नगरीय समाज के प्रतिबिंब का सार प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर: हड़प्पा सभ्यता (लगभग 2500-1900 ईसा पूर्व), जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है, ने अद्वितीय **नगरीय वास्तुकला और नियोजन** का प्रदर्शन किया, जो उच्च स्तर के नागरिक अनुशासन तथा तकनीकी प्रगति को प्रतिबिंबित करता है।

हड़प्पा वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ

- **नगर नियोजन एवं शहरी रूपरेखा:**
  - **नगर नियोजन:** नगरों का निर्माण **ग्रिड पैटर्न में किया गया था, जहाँ सड़कें आपस में समकोण पर मिलती थीं।**
    - एक उन्नत **भूमिगत जल-निकासी प्रणाली** द्वारा प्रत्येक आवास को ढकी हुई सड़क नालियों से जोड़ा था।
    - निर्माण कार्यों में भट्ठी में पकी मिट्टी की ईंटों का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया, जिन्हें **जिप्सम मोर्टार** से जोड़ा गया था।
  - **शहरी रूपरेखा:** नगर आमतौर पर दो स्पष्ट क्षेत्रों में विभाजित होते थे—**दुर्ग**, जो ऊँचा एवं सुरक्षित होता था तथा संभवत: धार्मिक एवं प्रशासनिक कार्यों में संलग्न लोगो का आवास यहीं था और **निचला नगर**, जो सामान्य जनसंख्या के आवासीय क्षेत्र के रूप में होता था।

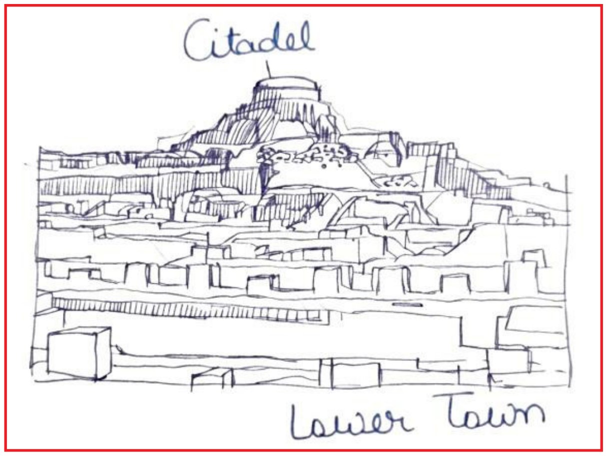

    - **मोहनजोदड़ो का 'विशाल स्नानागार'** हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रतीकात्मक संरचनाओं में से एक है, जिसका उपयोग धार्मिक या आनुष्ठानिक स्नान के लिये किया जाता था, जो हड़प्पा संस्कृति में जल के महत्त्व को दर्शाता है।
    - **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में बड़े अनाज भंडार** खोजे गए हैं, जो ऊँचे चबूतरों पर निर्मित थे और जिनमें वेंटिलेशन की सुविधा थी।
    - नगरों में अनेक **सार्वजनिक और निजी कुएँ** निर्मित किये गए थे। विशेष रूप से **धौलावीरा** में **जल संरक्षण की असाधारण तकनीकों** को जलाशयों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।
- **निर्माण सामग्री और तकनीक:**
  - भट्ठी में पकी ईंटों के अलावा **लकड़ी और पत्थर** का भी सावधानीपूर्वक प्रयोग किया गया है।
  - भवनों को प्राय: **मुख्य दिशाओं** के अनुसार स्थित किया जाता था, जो **खगोलीय जागरूकता** का संकेत देता है।
  - इसमें **सजावटी सौंदर्य की तुलना में उपयोगिता** पर अधिक ध्यान दिया गया। संरचनाएँ व्यावहारिक आवश्यकताओं **(आवास, भंडारण, जल उपयोग और स्वच्छता)** को पूरा करने के लिये डिज़ाइन की गई थीं।

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला एक **अत्यंत विकसित नगरीय संस्कृति** को प्रकट करती है, **जिसने उपयोगिता, स्वच्छता और सौंदर्यबोध पर विशेष ध्यान दिया।** मानकीकृत निर्माण, समेकित सार्वजनिक सुविधाएँ और शहरी क्षेत्रों का नियोजन उनकी धरोहर हैं, जो प्राचीन भारत में सिविल इंजीनियरिंग की उत्कृष्टता का प्रारंभिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न 2. अकबर की धार्मिक समन्वयता के प्रमुख पहलुओं का परीक्षण कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- धार्मिक समन्वयता के प्रति अकबर के दृष्टिकोण और उसके शासनकाल में इसके महत्त्व का संक्षेप में परिचय दीजिये।
- सुलह-ए-कुल, जज़िया कर उन्मूलन, धार्मिक संवाद और अन्य नीतियों जैसे मुख्य पहलुओं पर चर्चा कीजिये।
- भारतीय समाज और शासन पर उनकी समन्वयकारी नीतियों के दीर्घकालिक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष दीजिये।

उत्तर: तीसरे मुगल सम्राट अकबर (वर्ष 1556–1605), अपनी **धार्मिक समन्वयता की नीति** के लिये प्रसिद्ध हैं, जिसका उद्देश्य भारत में विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सामंजस्य और समझ स्थापित करना था।

अकबर की धार्मिक समन्वयता के मुख्य पहलू

- **दीन-ए-इलाही (ईश्वर का धर्म): वर्ष 1582 में** अकबर ने **दीन-ए-इलाही** की स्थापना की, जो **एक समन्वयी धार्मिक विचारधारा** थी और इसमें विभिन्न धर्मों, विशेष रूप से इस्लाम, हिंदू धर्म और पारसी धर्म के तत्त्वों का मिश्रण किया गया था।
  - यह धर्म **नैतिक गुणों, जैसे– सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और धर्मनिष्ठा** पर बल देता था, हालाँकि इसका **उद्देश्य सामूहिक धर्मांतरण** नहीं था और यह अकबर के कुछ दरबारियों तक ही सीमित रहा।
- **सुलह-ए-कुल (सार्वभौमिक शांति): सुलह-ए-कुल** अकबर की मौलिक नीति थी, जिसने सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और यह सुनिश्चित किया कि सभी धर्मों के लोग, जिनमें हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य शामिल हैं, शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व के साथ रह सकें।
- **धार्मिक संवाद और इबादतखाना:** अकबर ने **इबादतखाना** में धार्मिक परिचर्चा की शुरुआत की, जहाँ उन्होंने **बौद्धिक और आध्यात्मिक चर्चाओं** को प्रोत्साहित किया, जिससे सहिष्णुता एवं सहयोग की संस्कृति विकसित हुई।
  - इससे आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा मिला तथा विभिन्न धार्मिक परंपराओं से विचारों एवं दर्शन के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन मिला।
- **धार्मिक करों का उन्मूलन: वर्ष 1564 में** अकबर ने **जज़िया** कर, जो गैर-मुस्लिमों पर लगाया जाता था, को समाप्त कर दिया तथा उन्होंने हिंदुओं पर लगाए जाने वाले **तीर्थयात्रा करों** को भी खत्म किया, जिससे उनकी न्यायप्रियता एवं धार्मिक स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता और दृढ़ हुई।
- **धार्मिक साहित्य का संवर्द्धन:** अकबर ने **महत्त्वपूर्ण हिंदू ग्रंथों**, जैसे– **महाभारत** और **रामायण** का फारसी में **अनुवाद** करवाने का समर्थन किया।

इसके अतिरिक्त, अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल दरबार में **दीवाली** और **होली** जैसे **हिंदू त्योहारों** का आयोजन भी किया गया, जो उनके विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान और स्वीकार्यता का प्रतीक था।

हालाँकि, अकबर का धार्मिक समन्वय का प्रयोग, जैसे– **दीन-ए-इलाही** उनकी मृत्यु के बाद अधिक समय तक नहीं चला, लेकिन उनकी **सुलह-ए-कुल** नीति और समावेशी शासन का प्रभाव भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य पर दीर्घकालिक रूप से पड़ा।

प्रश्न 3. 'मूर्तिकारों ने चंदेल कलारूपों को जीवन की व्यापकता और लचकदार ओज से भर दिया।' स्पष्ट कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण

- **परिचय:** चंदेल वंश का परिचय दीजिये और भारतीय कला, विशेषकर मूर्तिकला में उनके योगदान का महत्त्व स्पष्ट कीजिये।
- **मुख्य भाग:** चंदेलों की मूर्तिकला के मुख्य पहलुओं का विस्तार से वर्णन कीजिये, जैसे- **गतिशीलता, सूक्ष्म एवं जटिल विवरण** और उनके कार्यों में **जीवन के विभिन्न पहलुओं** का प्रतिनिधित्व।
- **निष्कर्ष:** उनकी कला का दीर्घकालिक प्रभाव संक्षेप में प्रस्तुत कीजिये, जिसने दैवीय और लौकिक जीवन, दोनों को समाहित किया।

उत्तर: चंदेल वंश (9वीं से 13वीं शताब्दी) ने **मध्य भारत** पर शासन किया और भारतीय वास्तुकला तथा मूर्तिकला में अपने अद्वितीय योगदान के लिये प्रसिद्ध है। चंदेल कला के मूर्तिकारों ने अपनी कृतियों में **सजीव ऊर्जा और जीवन के विविध पहलुओं** को समाहित किया, जिससे उनकी मूर्तियाँ **धार्मिक** एवं सांस्कृतिक विषयों के **गतिशील प्रतिनिधित्व** में बदल गईं।

चंदेलों की मूर्तिकला कला के मुख्य पहलू

- **बहुआयामी एवं सजीव मूर्तिकला:** मूर्तियाँ प्रायः **सौम्य एवं लयबद्ध मुद्राओं** में प्रदर्शित की गई हैं, जो आकृतियों में **जीवन और ऊर्जा** का संचार करती हैं।
  - उदाहरण के लिये, **कंदरिया महादेव मंदिर** की मूर्तियाँ ऐसी लगती हैं, जैसे उनमें लय और गति हो, जो पत्थर में भी **चलने-फिरने का आभास** कराती हैं।

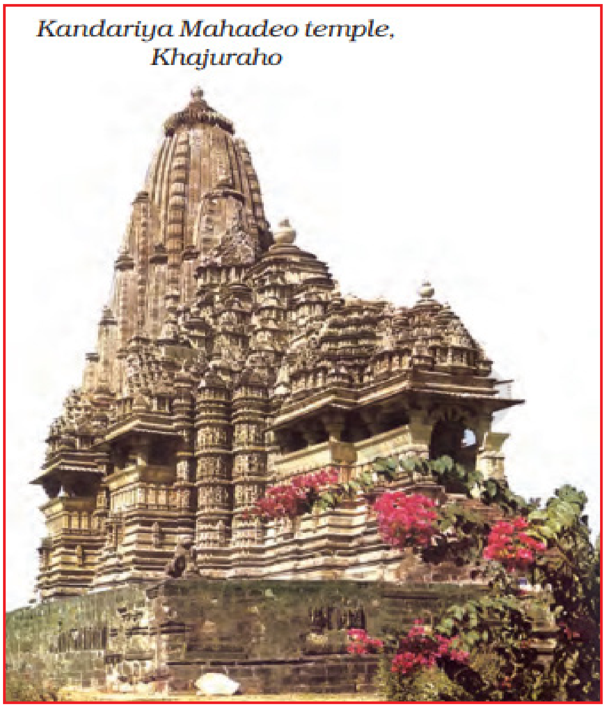

- **धार्मिक और पौराणिक विषय:** चंदेलों की मूर्तिकला पर **हिंदू पौराणिक कथाओं** का गहरा प्रभाव था। **शिव, विष्णु, ब्रह्मा** और **काली** की प्रतिमाएँ अत्यंत गहराई एवं बारीकी से तराशी गईं, जिसने आध्यात्मिकता को और अधिक समृद्ध बना दिया।
  - **मंदिर की दीवारें पौराणिक कथाओं** और **महाकाव्यों** जैसे **महाभारत** एवं **रामायण** के दृश्यों से अलंकृत हैं। उदाहरणस्वरूप, **खजुराहो के मंदिर** विशेष रूप से अपनी मूर्तियों में **काम, अर्थ** और **धर्म** के प्रदर्शन के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **सूक्ष्मता और यथार्थवाद:** इस काल की मूर्तियाँ अपनी **बारीक नक्काशी और सूक्ष्म विवरण** के लिये प्रसिद्ध हैं।
  - मानव आकृतियों के चित्रण में **शारीरिक अंगों की सटीकता**, साथ ही **वस्त्रों, आभूषणों और चेहरे की भाव-भंगिमाओं की नक्काशी** मूर्तिकारों की मानव शरीर की गहन समझ एवं उनके कलात्मक कौशल, दोनों को दर्शाती हैं।
  - **केश-विन्यास, परिधानों** और **भाव-भंगिमाओं के सूक्ष्म चित्रण** उनके यथार्थवाद के प्रति समर्पण को प्रदर्शित करते हैं।
- **जीवन के विविध आयामों का चित्रण: चंदेल कला** की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें **जीवन के विभिन्न पक्षों** को समग्र रूप से दर्शाया गया है।
  - **खजुराहो की मूर्तियाँ** केवल **देवी-देवताओं के चित्रण** तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें **देवगण, योद्धा, नर्तक, संगीतकार** तथा **दैनिक जीवन के दृश्य** भी प्रदर्शित किये गए हैं।
  - यह विविध चित्रण **चंदेलों की समग्र दृष्टि** को प्रकट करता है, जिसमें **दैवीय** और **लौकिक** को भिन्न नहीं, बल्कि परस्पर जुड़ा हुआ माना गया।
- **प्रतीकात्मकता एवं आध्यात्मिकता:** अनेक मूर्तियाँ—विशेषकर **देवी-देवताओं की—सृष्टि, पालन तथा संहार के सार्वभौमिक सिद्धांतों** का प्रतिनिधित्व करती हैं।
  - **खजुराहो की कामुक मूर्तियाँ** प्रतीकात्मक हैं। ये **दैवीय एवं मानव ऊर्जा के मिलन** को दिखाती हैं और साथ ही **प्रजनन** तथा **ब्रह्मांड** में व्याप्त **रचनात्मक ऊर्जा** का प्रदर्शन भी करती हैं।

निष्कर्षतः **गतिशील मानव आकृतियों**, सूक्ष्म विवरण, धार्मिक विषयों और **कामुकता के सम्मिलन ने एक ऐसा कलारूप रचा**, जो भारतीय मूर्तिकला धरोहर के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। यह धरोहर उस सभ्यता को दर्शाती है, जिसने जीवन के सभी रूपों को **दैवी ऊर्जा का अवतार** माना, जिससे उनकी कला अपनी प्रासंगिकता और सौंदर्य में कालातीत बन गई।

प्रश्न 4. जलवायु परिवर्तन और समुद्र स्तर में वृद्धि कई द्वीपीय देशों के अस्तित्व को कैसे प्रभावित कर रही है? उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- **परिचय:** जलवायु परिवर्तन और समुद्र स्तर में वृद्धि किस प्रकार वैश्विक स्तर पर द्वीपीय देशों को प्रभावित कर रही है, इसका संक्षिप्त परिचय दीजिये।
- **मुख्य भाग:** समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण द्वीपीय देशों पर पड़ने वाले विशिष्ट प्रभावों की चर्चा कीजिये, उदाहरण सहित इसके सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों को स्पष्ट कीजिये।
- **निष्कर्ष:** द्वीपीय देशों को प्रभावित करने वाले इस अस्तित्वगत खतरे का सामना करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और जलवायु कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर: 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध से वैश्विक समुद्र स्तर लगभग **21-24 सेंटीमीटर** बढ़ चुका है और हाल के दशकों में यह वृद्धि और तेज़ हुई है। इस वृद्धि का मुख्य कारण **ग्लेशियरों और हिम पट्टियों का पिघलना** तथा बढ़ते तापमान के कारण समुद्र के जल का **तापीय विस्तार** है। समुद्र स्तर में इस तेज़ वृद्धि से कई द्वीपीय देशों का अस्तित्व ही खतरे में है।

समुद्र स्तर में वृद्धि से द्वीपीय राष्ट्रों का अस्तित्व प्रभावित हो रहा है:

भूमि का जलमग्न होना और पर्यावासीय क्षति:

- कई द्वीपीय देश छोटे और **निम्न-भूमि वाले एटोल्स** से बने हैं, जो बढ़ते समुद्र के स्तर के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं।
- **मालदीव** की औसत भूमि सतह **समुद्र तल से केवल 1.5 मीटर ऊपर है**, जिससे यह दुनिया के सबसे संवेदनशील देशों में से एक है।
  - जैसे-जैसे समुद्र का स्तर बढ़ता है, पूरे द्वीपों के जलमग्न होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप आबादी का विस्थापन होता है।
- इसी प्रकार, **किरीबाती,** एक और **निम्न-भूमि वाला प्रशांत द्वीपीय राष्ट्र**, मीठे पानी के स्रोतों और कृषि योग्य भूमि में समुद्री जल के प्रवेश का सामना कर रहा है।
  - यह न केवल पीने के पानी को प्रभावित करता है, बल्कि कृषि को भी बाधित करता है, जो खाद्य सुरक्षा के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किरीबाती की सरकार को लोगों के **पुनर्वास** के विकल्पों का पता लगाने के लिये मजबूर होना पड़ा है।

जीविका पर आर्थिक प्रभाव:

- द्वीपीय देश **मत्स्य पालन** और **पर्यटन** जैसे उद्योगों पर अत्यधिक निर्भर हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण खतरे में हैं।
- उदाहरण के लिये, **मार्शल द्वीपसमूह** और **तुवालु** में समुद्र के बढ़ते तापमान के कारण प्रवाल भित्तियों का क्षरण हो रहा है।
  - प्रवाल भित्तियाँ **तेज लहरों के खिलाफ प्राकृतिक अवरोध के रूप में** भी कार्य करती हैं **और इनके नष्ट हो जाने से तटीय समुदाय सुनामी** एवं **उष्णकटिबंधीय तूफानों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।**
- समुद्र स्तर में वृद्धि और पर्यावरणीय क्षरण के कारण पर्यटन भी खतरे में है। **मालदीव**, जो अपने स्वच्छ समुद्र तटों और लक्ज़री रिज़ॉर्ट के लिये प्रसिद्ध है, समुद्र तट के कटाव, बाढ़ और अवसंरचना को हुए नुकसान जैसी बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहा है।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:

- समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण होने वाला पलायन इन संस्कृतियों के अस्तित्व को ही खतरे में डाल देता है।
- **वैनुअतु** के लोगों ने पहले ही बाढ़ के कारण समुदायों के पुनर्वास का अनुभव किया है।
  - **सोलोमन द्वीपसमूह** में बढ़ते समुद्र स्तर के कारण कई गाँवों को पहले ही पुनर्वासित किया जा चुका है और यह चिंता व्यक्त की जा रही है कि इन पलायनों के कारण **पहचान की हानि** हो सकती है, क्योंकि समुदाय नई जगहों पर अपनी परंपराओं और जीवन-शैली को बनाए रखने के लिये संघर्ष कर रहे हैं।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता:

- द्वीपीय देश अक्सर ऐसे क्षेत्रों में स्थित होते हैं, जो **चक्रवात, तूफान** और **सुनामी** जैसी **प्राकृतिक आपदाओं** के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं।
- जलवायु परिवर्तन के साथ **इन तूफानों की तीव्रता और आवृत्ति बढ़ रही है,** जिससे इन नाज़ुक पारिस्थितिकीय तंत्रों एवं उनके निवासियों के लिये खतरा बढ़ रहा है।
- **फिलीपींस** और **फिजी** ने हाल के वर्षों में अधिक तीव्र चक्रवातों का सामना किया है, जिससे व्यापक पैमाने पर विनाश हुआ है।

इन चुनौतियों के जवाब में अनुकूलन रणनीतियाँ, जैसे:

- **तटीय सुरक्षा** को मज़बूत करना, **जल प्रबंधन** में सुधार करना और **तकनीकी समाधान** लागू करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस संकट को और बढ़ने से रोकने के लिये **वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन को कम करने के प्रयास**, जैसे– **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन** में कमी और **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों** की ओर बदलाव, अत्यंत आवश्यक हैं।

निष्कर्षत: इन देशों की सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति उनकी सहनशीलता सुनिश्चित करने के लिये वैश्विक सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 2015 का **पेरिस समझौता** एक प्रगति का कदम था, लेकिन द्वीपीय राष्ट्र अब भी **अनुकूलन और शमन रणनीतियों** के लिये अधिक वित्तीय सहायता की मांग कर रहे हैं।

प्रश्न 5. गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियाँ क्या हैं? ये गतिविधियाँ भारत में भौगोलिक विशेषताओं से किस प्रकार संबंधित हैं? उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- **परिचय:** गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियों को परिभाषित कीजिये और अर्थव्यवस्था में उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिये।
- **मुख्य भाग:** विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिये कि ये गतिविधियाँ भारत की विविध भू-आकृतिक विशेषताओं से किस प्रकार प्रभावित होती हैं।
- **निष्कर्ष:** गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियों और भारत के विविध भौगोलिक परिदृश्य के बीच मज़बूत संबंध पर ज़ोर देते हुए निष्कर्ष दीजिये।

उत्तर: गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियों के अंतर्गत मत्स्य पालन, खनन, वानिकी और पशुपालन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। भारत की विविध भौगोलिक संरचना, जो **पहाड़ों, मैदानों, तटीय क्षेत्रों और पठारों** तक फैली हुई है, इन गतिविधियों के प्रकार और उनके वितरण को पूरे देश में महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

भारत में गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियाँ और उनका भू-आकृतिक विशेषताओं के साथ संबंध:

मत्स्य पालन: तटीय और अंतर्देशीय जल संसाधन

- **तटीय क्षेत्र:** तटीय क्षेत्रों में जहाँ **समुद्र और महासागरों की उपस्थिति समृद्ध समुद्री संसाधन प्रदान करती है,** वहाँ मत्स्य पालन एक प्रमुख गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधि है। **केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु** और **आंध्र प्रदेश** जैसे राज्य अपनी विस्तृत तटरेखाओं के कारण लाभान्वित होते हैं, जिससे **समुद्री मत्स्य पालन** एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि बन जाता है।
  - **सुंदरवन** का मैंग्रोव वन पश्चिम बंगाल में **जलीय कृषि** तथा **मत्स्यन** के लिये प्रसिद्ध है।
  - **कोंकण तट** (महाराष्ट्र एवं गोवा) अपने मत्स्य उद्योग के लिये प्रसिद्ध है, जहाँ पारंपरिक विधियाँ, जैसे- **ट्रॉल मत्स्यन** तथा **समुद्री शैवाल की खेती** प्रचलित हैं।
- **आंतरिक जल निकाय:** नदियाँ और झीलें भी **स्वच्छ जलीय मत्स्यन** हेतु सहायक हैं।
  - उदाहरण के लिये, **केरल बैकवाटर मात्स्यिकी** हेतु प्रसिद्ध है तथा **मध्य प्रदेश** के क्षेत्र **नदी-आधारित मात्स्यिकी** अपनाते हैं।

वानिकी: पर्वतीय क्षेत्रों में समृद्ध वन संसाधन

- **हिमालयी एवं पर्वतीय क्षेत्र: हिमालय** वन संसाधनों से समृद्ध है, जो इमारती लकड़ी, औषधीय पौधे तथा ईंधन की लकड़ी उपलब्ध कराता है।
  - **उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर** तथा **उत्तर-पूर्वी भारत वानिकी गतिविधियों** के लिये प्रसिद्ध हैं, जिनमें **सिल्वीकल्चर** (वन प्रबंधन एवं संवर्द्धन) तथा **औषधीय पौधों** का संग्रह सम्मिलित हैं।
  - **पश्चिमी घाट** जैवविविधता एवं वनों से समृद्ध है, जहाँ **कर्नाटक, केरल** तथा **तमिलनाडु रबर उत्पादन, मसाले** एवं **बाँस की कटाई** जैसी गतिविधियों से लाभान्वित होते हैं।

खनन: खनिज समृद्ध क्षेत्र

- **छोटानागपुर पठार:** ये भारत के प्रमुख **खनन केंद्रों** में से एक है, जो **कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट** और **अभ्रक** जैसे खनिजों से समृद्ध है। **झारखंड, ओडिशा, बिहार** और **छत्तीसगढ़** जैसे राज्यों में खनिजों के समृद्ध भंडारों की उपस्थिति के कारण यहाँ पर्याप्त खनन गतिविधियाँ होती हैं।
  - **उदाहरण:** झारखंड का **धनबाद** क्षेत्र भारत के सबसे बड़े कोयला खनन क्षेत्रों में से एक है।
- **दक्कन का पठार: दक्कन का पठार** अपने समृद्ध **बॉक्साइट** और **चूना-पत्थर** के भंडार के लिये भी जाना जाता है, विशेष रूप से **महाराष्ट्र, कर्नाटक** और **आंध्र प्रदेश।**

पशुपालन: शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में चरागाह

- **रेगिस्तानी एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र: चरागाहों** के व्यापक विस्तार वाले क्षेत्रों में पशुपालन एक महत्त्वपूर्ण गैर-कृषि गतिविधि है।
  - **राजस्थान** और **गुजरात के रेगिस्तान** अपनी विस्तृत चरागाह भूमि के साथ **ऊँट पालन, भेड़ पालन** और **मवेशी पालन** के लिये जाने जाते हैं।
- **पर्वतीय क्षेत्र:** भूभाग और जलवायु के कारण **हिमालय की तलहटी याक पालन** तथा **भेड़ पालन** के लिये उपयुक्त है, जो ऊन, दूध एवं माँस प्रदान करते हैं।

निष्कर्षत: तटीय क्षेत्रों में **मात्स्यिकी** से लेकर पठारी क्षेत्रों में **खनन** तथा शुष्क क्षेत्रों में **पशुपालन** तक भारत का भौतिक परिदृश्य इन गैर-कृषि प्राथमिक गतिविधियों के विकास और सफलता को आकार देता है। इस संबंध को समझना **क्षेत्रीय विकास एवं संसाधन प्रबंधन की रणनीतियों के लिये महत्त्वपूर्ण** है।

प्रश्न 6. उपयुक्त उदाहरणों के साथ भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन के पारिस्थितिकीय और आर्थिक लाभों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- **परिचय:** भारत की नवीकरणीय ऊर्जा रणनीति में सौर ऊर्जा को एक प्रमुख घटक के रूप में प्रस्तुत कीजिये।
- **मुख्य भाग:** प्रासंगिक उदाहरणों के साथ उत्सर्जन में कमी, जल संरक्षण और वायु गुणवत्ता में सुधार सहित पारिस्थितिकीय लाभों पर चर्चा कीजिये।
  - आर्थिक लाभों को स्पष्ट कीजिये, जैसे- रोज़गार सृजन, लागत-कुशलता और आय में विविधता तथा इन्हें राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा और सतत् विकास से जोड़िये।
- **निष्कर्ष:** तदनुसार निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: सौर ऊर्जा भारत के नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों की ओर संक्रमण का एक प्रमुख स्तंभ है और पारिस्थितिकीय स्थिरता एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। यह पेरिस समझौते और सतत् विकास लक्ष्य-7 (वहनीय और स्वच्छ ऊर्जा) के तहत भारत की प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है तथा विकास में न्याय, स्थायित्व एवं सौहार्द को बढ़ावा देती है।

सौर ऊर्जा के पारिस्थितिकीय लाभ

- **कार्बन उत्सर्जन में कमी:** सौर ऊर्जा से कोयला आधारित विद्युत उत्पादन की तुलना में लगभग 20 गुना कम CO_2 उत्सर्जित होती है (IPCC)।
  - उदाहरणार्थ, वर्ष 2023 में भारत की सौर क्षमता ने 60 मिलियन टन से अधिक CO_2 उत्सर्जन से बचाव किया।
- **जल संसाधनों का संरक्षण: सौर पीवी संयंत्रों को** थर्मल संयंत्रों की तुलना में **न्यूनतम जल** की आवश्यकता होती है और यह SDG-6 (स्वच्छ जल एवं स्वच्छता) को समर्थन प्रदान करता है।
- **विकेंद्रीकृत स्वच्छ ऊर्जा:** सौर माइक्रोग्रिड ग्रामीण क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करते हैं (उदाहरणार्थ- सुंदरवन)।
  - **सीमांत समुदायों के लिये पर्यावरणीय न्याय को** प्रोत्साहित करती है।
- **वायु गुणवत्ता में सुधार:** यह **थर्मल संयंत्रों से निकलने वाले SO_2 और NOx** जैसे प्रदूषकों को कम करती है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।
  - उदाहरण: दिल्ली की इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड ने **डीज़ल जेनसेट के स्थान पर रूफटॉप सौर ऊर्जा** का प्रयोग शुरू कर दिया है।
- **भूमि के कुशल उपयोग के लिये कृषि-सौर संयोजन: सौर पैनलों के नीचे फसल उगाई जाती है, जिससे भूमि का दोहरा लाभ मिलता है (उदाहरणार्थ, दिल्ली की कृषि-सह-सौर फार्म योजना)।**

सौर ऊर्जा के आर्थिक लाभ

- **रोज़गार सृजन:** भारत में सौर पीवी क्षेत्र ने ऑन-ग्रिड और ऑफ-ग्रिड, दोनों प्रणालियों में लगभग 3,18,600 लोगों को रोज़गार प्रदान किया (IRENA 2024)।
  - **वर्ष 2030 तक लक्ष्य:** भारत 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता प्राप्त कर लगभग 3.4 मिलियन रोज़गार सृजित कर सकता है (CEEW)।
- **लागत-कुशलता एवं ऊर्जा सुरक्षा:** भारत में **सौर ऊर्जा की लागत 2010-24 के दौरान 95% तक घट गई है,** जिससे सुलभ एवं निरंतर स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध होने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।
  - भारत, जो तेल का तीसरा सबसे बड़ा आयातक है, जीवाश्म ईंधन के आयात पर अपनी निर्भरता कम कर सकता है।
- **किसानों के लिये आय में विविधता: पीएम-कुसुम और पीएम सूर्य घर—मुफ्त बिजली योजना किसानों एवं घर के मालिकों को अतिरिक्त** बिजली को ग्रिड में **बेचकर आय अर्जित करने में** सक्षम बनाती है।

- **विनिर्माण और निर्यात में वृद्धि:** सौर पीवी मॉड्यूल के लिये PLI योजना घरेलू उद्योग को प्रोत्साहित करती है।
  - लक्ष्य वर्ष2030 तक 280 गीगावाट सौर क्षमता हासिल करना है।
- **MSME और शहरी गरीबों के लिये सहायता:** रूफटॉप सौर ऊर्जा MSME के संचालन खर्च को कम करती है और बिजली बिल घटाती है।

निष्कर्षत: भारत में सौर ऊर्जा पर्यावरणीय स्थिरता और समावेशी आर्थिक विकास के तालमेल का उदाहरण है। स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देकर यह जलवायु न्याय प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है और सतत् विकास लक्ष्यों तथा संविधान की प्रस्तावना में न्याय एवं समानता के दृष्टिकोण के अनुरूप सभी के लिये ऊर्जा की पहुँच सुनिश्चित करती है। सौर मिशनों का प्रभावी कार्यान्वयन भारत को वैश्विक हरित ऊर्जा क्षेत्र में अग्रणी बना सकता है।

प्रश्न 7. सुनामी क्या हैं? वे कैसे और कहाँ बनती हैं ? उनके परिणाम क्या हैं? उदाहरणों सहित समझाइये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- **परिचय:** सुनामी को परिभाषित कीजिये।
- **मुख्य भाग:**
  - प्रासंगिक उदाहरणों के साथ सुनामी के विभिन्न कारणों (जो सुनामी का निर्माण करते हैं) को स्पष्ट कीजिये तथा इसके परिणामों पर चर्चा कीजिये।
- **निष्कर्ष:** तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर: सुनामी **विशाल शक्तिशाली समुद्री लहरें होती हैं,** जो जल के आकस्मिक विस्थापन के कारण उत्पन्न होती हैं। ऐसा आमतौर पर समुद्र के नीचे आए भूकंपों के कारण होता है। जापानी शब्दों *त्सु* (बंदरगाह) और *नामी* (लहर) से व्युत्पन्न, सुनामी तटीय पारिस्थितिकीय तंत्र, बुनियादी ढाँचे और मानव जीवन के लिये, विशेष रूप से विवर्तनिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में, गंभीर खतरा उत्पन्न करती हैं।

सुनामी का सृजन

- **सागर-तलीय भूकंप:** प्रविष्ठन क्षेत्र के समानांतर प्लेटों के एकाएक लंबवत् संचलन से सुनामी उत्पन्न होती है।
  - उदाहरण के लिये, वर्ष 2004 में सुमात्रा के निकट 9.1 तीव्रता के भूकंप के कारण हिंद महासागर में सुनामी आई थी।
- **ज्वालामुखी विस्फोट:** निमग्न (सागर-तल) या तटीय ज्वालामुखी गतिविधि जल को विस्थापित करती है।
  - उदाहरणार्थ, वर्ष 2022 में टोंगा हुंगा-हुंगा हा'अपाई ज्वालामुखी विस्फोट ने वैश्विक सुनामी उत्पन्न की।
- **भूस्खलन (सागर-तल या तटीय):** तटीय भूमि का अचानक समुद्र में ढह जाना, जिससे जल विस्थापित होता है और सुनामी जैसी लहरें बन सकती हैं।
  - उदाहरणार्थ, लिटुआ बे सुनामी, अलास्का (1958)।
  - **हिमनद विखंडन या उल्कापिंड प्रभाव:** दुर्लभ घटनाएँ, किंतु बड़े पैमाने पर बर्फ का गिरना या अंतरिक्षीय पिंडों का प्रभाव जल को विस्थापित कर सकता है।
  - उदाहरण: ऐसा माना जाता है कि **चिक्सुलब प्रभाव (66 मिलियन वर्ष पूर्व)** के कारण सुनामी आई, जिसने **डायनासोरों के विलुप्त होने** में योगदान दिया।
- **सागर-तल परमाणु विस्फोट:** समुद्र की सतह के नीचे होने वाले परमाणु विस्फोट बड़े पैमाने पर जल को विस्थापित कर शक्तिशाली सुनामी लहरें उत्पन्न कर सकते हैं।

सुनामी के परिणाम

- **मानवीय क्षति:** सुनामी की विशाल लहरों की प्रबल शक्ति के कारण बड़े पैमाने पर जीवन की हानि हो सकती है।
  - उदाहरण: वर्ष *2004 में हिंद महासागर में आई सुनामी से* कई देशों में 230,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी।
- **आर्थिक हानि:** सुनामी अवसंरचना, आवास, कृषि और मत्स्य उद्योग जैसी औद्योगिक गतिविधियों को गंभीर क्षति पहुँचाती है।
  - उदाहरण: जापान में 2011 में आई तोहोकू सुनामी के परिणामस्वरूप अरबों डॉलर और मानव पूंजी का नुकसान हुआ।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियाँ और दलदली क्षेत्र, जैसे– तटीय आवासीय स्थल नष्ट हो सकते हैं, जिससे दीर्घकालिक पारिस्थितिकीय हानि होती है।
  - मीठे पानी के स्रोतों में समुद्री जल का प्रवेश स्थानीय पारिस्थितिकीय तंत्र को भी प्रभावित कर सकता है।
- **स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संकट:** अवसंरचना के विनाश से जलजनित रोग, चिकित्सा सुविधाओं की कमी और अस्वच्छता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
  - उदाहरणार्थ: *2004 की सुनामी* के बाद प्रभावित क्षेत्रों में हैज़ा का प्रकोप रहा।

- वर्ष 2004 की सुनामी के बाद **गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों में परिवारों के स्वास्थ्य पर खर्च** कम समयावधि में **35% तक** बढ़ गया।

- **मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आघात:** सुनामी से बचे लोग अक्सर लंबे समय तक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझते हैं, जिनमें गंभीर आघात के बाद उत्पन्न मानसिक तनाव (PTSD) भी शामिल होता है।
  - सांस्कृतिक धरोहरों की हानि और समुदायों का विस्थापन मानसिक प्रभाव को और भी गहरा कर देता है।

निष्कर्षत: जलवायु परिवर्तन एवं समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि ने सुनामी की संवेदनशीलता को और बढ़ा दिया है। इसके प्रभाव को कम करने के लिये प्रारंभिक चेतावनी तंत्र (जैसे कि INCOIS सुनामी चेतावनी केंद्र) को मज़बूत करना, तटीय सहनशीलता को बढ़ाना तथा सामुदायिक तैयारी को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है। ये प्रयास सतत् विकास लक्ष्य 13, जलवायु कार्यवाही तथा सतत् विकास लक्ष्य 11, सतत् नगर एवं समुदाय के उद्देश्यों के अनुरूप हैं।

प्रश्न 8. भारत में स्मार्ट शहर शहरी गरीबी और वितरणात्मक न्याय के मुद्दों को कैसे संबोधित करता है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- **परिचय:** भारत में स्मार्ट शहर की अवधारणा और उनका मुख्य उद्देश्य प्रस्तुत कीजिये।
- **मुख्य भाग:** शहरी गरीबी को कम करने और स्मार्ट शहर में वितरणात्मक न्याय को बढ़ावा देने वाली प्रमुख पहलों को उपयुक्त उदाहरणों के साथ उजागर कीजिये।
- **निष्कर्ष:** उपयुक्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर: भारत में स्मार्ट शहर, जिन्हें **स्मार्ट सिटीज़ मिशन (वर्ष 2015)** के अंतर्गत परिकल्पित किया गया है, तकनीक तथा **आँकड़ा-आधारित समाधानों का प्रयोग करके शहरी जीवन को बेहतर बनाने के लिये** तैयार किये गए हैं। इनके प्रमुख उद्देश्यों में से एक **शहरी गरीबी का समाधान करना** तथा **सभी नागरिकों**, विशेषकर सीमांत समूहों के लिये **संसाधनों और अवसरों तक समान रूप से पहुँच** सुनिश्चित करके **न्यायपूर्ण वितरण करना** है।

शहरी गरीबी से निपटने और वितरणात्मक न्याय सुनिश्चित करने की प्रमुख पहलें

- **किफायती आवास:** स्मार्ट शहर **प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (PMAY-U)** जैसी **किफायती आवास योजनाओं को सम्मिलित करते हैं**, जिससे निम्न आय वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग (EWS) को पर्याप्त आवास उपलब्ध हो सके।
  - यह **झुग्गी-बस्ती विकास की समस्या** का समाधान करता है तथा **गरिमामय जीवन स्थितियाँ** प्रदान करता है।
- **मूलभूत सेवाओं तक पहुँच: जल आपूर्ति, स्वच्छता तथा अपशिष्ट प्रबंधन जैसी** उन्नत **आधारभूत संरचना** यह सुनिश्चित करती है कि शहरी गरीब भी मूलभूत सेवाओं से लाभान्वित हों तथा स्मार्ट तकनीक कुशल सेवा वितरण में सहायक होती है, जिससे सेवाओं की उपलब्धता में विषमताएँ कम हो जाती हैं।
  - विशाखापट्टनम का "ऑल-एबिलिटीज़" उद्यान सभी के लिये समावेशी स्थान प्रदान करता है।
- **सुलभ एवं निरंतर गतिशीलता:** स्मार्ट शहर सार्वजनिक परिवहन में **सुलभता, उपलब्धता तथा पर्यावरण-अनुकूलता को प्राथमिकता देकर उसे सशक्त बनाते हैं**। विद्युत बसें, मेट्रो प्रणाली तथा साइकिल-साझाकरण कार्यक्रम **महंगे निजी परिवहन पर निर्भरता घटाते हैं, यातायात में लगने वाले जाम को कम करते हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करते हैं।**
  - उदाहरण के लिये, **चंडीगढ़ ने भारत की सबसे बड़ी और सबसे घनी पैन-सिटी पब्लिक साइकिल शेयरिंग (पीबीएस) प्रणाली लागू की है।**
- **डिजिटल समावेशन:** ई-गवर्नेंस और **डिजिटल सेवाएँ** सरकारी योजनाओं को **सीमांत समुदायों तक** अधिक **सुलभ** बनाती हैं, उन्हें जानकारी, कौशल विकास के अवसर तथा स्वास्थ्य और शिक्षा तक पहुँच प्रदान करती हैं।
- **रोज़गार और आजीविका के अवसर:** स्मार्ट शहर **कौशल विकास केंद्र** व्यावसायिक प्रशिक्षण और **रोज़गार सृजन कार्यक्रमों को बढ़ावा देते हैं**, विशेष रूप से नगरीय गरीबों को ध्यान में रखते हुए।
  - यह सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देता है और आर्थिक अवसरों का व्यापक रूप से वितरण सुनिश्चित करता है।

निष्कर्षत: इन पहलों के माध्यम से भारत के स्मार्ट शहर यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि विकास सर्वसमावेशी हो और समाज के सभी वर्गों को लाभ पहुँचे। नगरीय गरीबों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए और संसाधनों के समान वितरण पर ध्यान केंद्रित करके स्मार्ट शहर न्यायपूर्ण व्यवस्था स्थापित करने तथा नगरीय गरीबी

को कम करने की दिशा में कार्य करते हैं, जिससे सर्वसमावेशी नगरीय विकास को बढ़ावा मिलता है।

प्रश्न 9. भारत में सिविल सेवा का लोकाचार व्यावसायिकता और राष्ट्रवादी चेतना के संयोजन का प्रतीक है, स्पष्ट कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- **प्रस्तावना:** सिविल सेवा की भावना
- **मुख्य भाग:** व्यावसायिकता पर प्रकाश डालें → योग्यता-आधारित UPSC भर्ती तथा सिविल सेवा में राष्ट्रीय चेतना।
- **निष्कर्ष:** उपयुक्त निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: भारतीय सिविल सेवा, जिसका प्रारंभिक गठन ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ था, स्वतंत्र भारत में शासन की एक महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में विकसित हुई है। इसकी भावना व्यावसायिकता और राष्ट्रीय चेतना के बीच संतुलन स्थापित करती है अर्थात् व्यावसायिक कार्यकुशलता और जवाबदेही सुनिश्चित करती है, जबकि राष्ट्रीय चेतना सिविल सेवकों को राष्ट्र के विकास और कल्याण में योगदान देने के लिये प्रेरित करती है। इन दोनों का संयोजन सिविल सेवा की उस भूमिका को आकार देता है, जिसके माध्यम से सुशासन, समानता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

भारतीय सिविल सेवा में व्यावसायिकता

- **योग्यता-आधारित भर्ती और दक्षता:** भारतीय सिविल सेवाएँ व्यावसायिक दक्षता पर ज़ोर देती हैं। कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि अधिकारियों का चयन उनके कौशल, ज्ञान और योग्यता के आधार पर हो। इससे लोक प्रशासन कार्यकुशलता और ईमानदारी के साथ संचालित होता है।
  - उदाहरण: **आर्थिक सुधारों के** निर्माण और **क्रियान्वयन** में सिविल सेवकों की भूमिका, **जैसे- वर्ष 1991 के एल.पी.जी. सुधार** इनकी जटिल नीतिगत परिवर्तनों को प्रबंधित करने की व्यावसायिक क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।
- **निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता:** सिविल सेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वे नीतियों और निर्णयों को बिना किसी पक्षपात के लागू करें तथा राजनीतिक संबद्धताओं की परवाह किये बिना जनता के हित में कार्य करें। यह व्यावसायिक भावना शासन की कार्यकुशलता और स्थिरता को बढ़ाती है।
  - **उदाहरण:** चुनावों में **सिविल सेवक अपनी भूमिका निभाते समय तटस्थ बने रहते हैं,** जिससे स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित होते हैं।
- **प्रशासनिक कार्यकुशलता के प्रति प्रतिबद्धता:** प्रशासनिक कार्यकुशलता के प्रति प्रतिबद्धता सरकारी नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में परिलक्षित होती है। प्रधानमंत्री आवास योजना और स्वच्छ भारत अभियान जैसे कार्यक्रम पारदर्शिता एवं कार्यकुशलता को ज़मीनी स्तर तक सुनिश्चित करते हैं।

भारतीय सिविल सेवा में राष्ट्रीय चेतना

- **राष्ट्रीय एकता और अखंडता का संवर्द्धन:** स्वतंत्रता के पश्चात् सिविल सेवकों को राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। वे क्षेत्रीय, भाषायी और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने की दिशा में कार्य करते हैं, जिससे एक सर्वसमावेशी राष्ट्र का निर्माण हो सके। उनकी राष्ट्रीय चेतना एक एकीकृत और लोकतांत्रिक भारत की परिकल्पना में निहित है।
  - **उदाहरण:** सरदार पटेल के सचिव के रूप में वी.पी. मेनन की भूमिका भारतीय संघ में रियासतों के एकीकरण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। उन्होंने वार्त्ता कर उनकी विलय संधि सुनिश्चित की।
- **राष्ट्र-निर्माण और जनकल्याण:** भारत में सिविल सेवक राष्ट्र-निर्माता भी होते हैं और उनका कार्य अक्सर गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आर्थिक प्रगति के इर्द-गिर्द केंद्रित रहता है। इस प्रकार वे सीधे तौर पर राष्ट्रीय विकास के व्यापक लक्ष्य में योगदान देते हैं।
- **संस्थाओं के निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता:** सिविल सेवक राष्ट्रीय संस्थाओं को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि वे अपने दायित्वों को प्रभावी रूप से पूरा करें। लोकतांत्रिक संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण, विधि का शासन और जनकल्याण इस चेतना की अभिव्यक्ति हैं।
  - **उदाहरण:** टी.एन. शेषन की भूमिका, निर्वाचन आयोग को मॉडल आचार संहिता के माध्यम से सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण रही, जिससे चुनावों में अधिक पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित हुई।
- **संविधान और न्याय की मान्यताओं के प्रति वचनबद्धता:** सिविल सेवा में राष्ट्रीय चेतना उनके न्याय और निष्पक्षता के मूल्यों के पालन में भी झलकती है, जिसका उद्देश्य सीमांत समुदायों का उत्थान करना और समान विकास सुनिश्चित करना है।
  - **उदाहरण:** पिछड़ी जातियों के लिये सकारात्मक कार्रवाई नीतियों के क्रियान्वयन एवं सिविल सेवाओं की भागीदारी सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को बनाए रखने में उनकी भूमिका को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्षत: भारतीय सिविल सेवा की भावना व्यावसायिकता और राष्ट्रीय चेतना का संयोजन है, जो राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के अनुरूप कुशल शासन सुनिश्चित करती है। सिविल सेवक देश की स्थिरता, प्रगति एवं एकता में योगदान देते हैं और यही द्वैध प्रतिबद्धता भारत की प्रशासनिक संरचना की नींव बनाती है।

प्रश्न 10. क्या आपको लगता है कि वैश्वीकरण का परिणाम केवल आक्रामक उपभोक्ता संस्कृति ही है? अपने उत्तर की पुष्टि कीजिये। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- **प्रस्तावना:** वैश्वीकरण का परिचय देते हुए अंतर्संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन पर इसके प्रभाव पर बल दीजिये।
- **मुख्य भाग:** वैश्वीकरण और आक्रामक उपभोक्ता संस्कृति के बीच संबंधों पर उदाहरणों सहित चर्चा कीजिये, साथ ही वैश्वीकरण के सकारात्मक पहलुओं पर भी प्रकाश डालिये।
- **निष्कर्ष:** उचित निष्कर्ष दीजिये।

उत्तर: **वैश्वीकरण ने परस्पर जुड़ाव बढ़ाया है, जिससे वस्तुओं,** सेवाओं, विचारों एवं संस्कृतियों का सीमाओं के पार **प्रवाह हुआ है** जिसने **समाजों का वैश्विक रूपांतरण किया है**। हालाँकि इसे अक्सर उपभोक्ता संस्कृति के उदय से जोड़ा जाता है, लेकिन इसके परिणाम बहुआयामी हैं।

वैश्वीकरण और आक्रामक उपभोक्ता संस्कृति

- **वैश्विक बाज़ारों का विस्तार:** वैश्वीकरण ने **बाज़ारों का विस्तार करके** और व्यापक उपभोग को प्रोत्साहित करके **आक्रामक उपभोक्ता संस्कृति** को बढ़ावा दिया है। **ऑनलाइन शॉपिंग और विज्ञापन** जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ **उपभोक्ता वस्तुओं को स्थिति, सुविधा** और **आधुनिकता के प्रतीक** के रूप में बढ़ावा देती हैं।
  - उदाहरण: **एप्पल जैसे ब्रांड्स ने वैश्विक विपणन रणनीतियों का लाभ उठाया** है, जो लोगों को भौतिकवाद अपनाने के लिये प्रेरित करती हैं।
- **सांस्कृतिक समानता: पश्चिमी आदर्शों और जीवन-शैली** के प्रसार के साथ, **उपभोक्तावाद में वृद्धि** हुई है, विशेष रूप से विकासशील देशों में।
  - **फास्ट फूड से लेकर फैशन तक उत्पादों की** वैश्विक **उपलब्धता** समान उपभोग प्रवृत्तियों की इच्छा पैदा करती है, जिससे एक ऐसी संस्कृति विकसित होती है, जो वस्तुओं को प्राप्त करने और प्रदर्शित करने पर केंद्रित होती है।
  - **उदाहरण:** के.एफ.सी. जैसी फास्ट फूड श्रृंखलाओं के प्रसार ने आहार संबंधी आदतों और सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित किया है।

उपभोक्तावाद से परे वैश्वीकरण के अन्य परिणाम

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समृद्धि:** वैश्वीकरण **विविध दृष्टिकोण** और **प्रथाओं** को सामने लाता है तथा कला, संगीत, शिक्षा एवं भोजन में **अंतर-सांस्कृतिक सहयोग** को प्रोत्साहित करता है, जिससे समाजों का समृद्धीकरण होता है।
  - **उदाहरण: बॉलीवुड फिल्मों के साथ-साथ भारतीय व्यंजनों की वैश्विक लोकप्रियता** उपभोग से परे संस्कृतियों के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाती है।
- **ज्ञान और प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण:** यह **प्रगति का विस्तार सीमाओं के पार करता है**, जिससे स्वास्थ्य, शिक्षा एवं उद्योग जैसे क्षेत्रों को लाभ होता है। यह केवल उपभोग तक सीमित नहीं है, बल्कि **जीवन स्तर में सुधार और आर्थिक प्रगति** को भी बढ़ावा देता है।
  - उदाहरण: **नामीबिया ऐसा पहला अफ्रीकी देश** है जिसने **भारत के UPI आधारित डिजिटल भुगतान प्रणाली** को लागू किया।
- **सामाजिक आंदोलन और वैश्विक जागरूकता:** वैश्वीकरण **वैश्विक सामाजिक आंदोलनों** को बढ़ावा देता है, जैसे कि **जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय** के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाना, जिससे केवल उपभोक्तावाद से परे एक अधिक जागरूक और वैश्विक दृष्टिकोण वाला समाज बनता है।
  - उदाहरण: **ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन** यह दिखाता है कि कैसे वैश्विक नेटवर्क और आंदोलन सिर्फ **उपभोग से परे** सामाजिक सक्रियता पर **केंद्रित** हो सकते हैं और **नस्लवाद, भेदभाव एवं जातीय असमानता जैसे मुद्दों** का समाधान करते हुए पुलिस बर्बरता और जातिवादी हिंसा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
- **आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन:** वैश्वीकरण ने **विशेष रूप से उभरती अर्थव्यवस्थाओं** में आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया है, जिससे व्यापार, निवेश और वैश्विक बाज़ारों तक पहुँच के माध्यम से लाखों लोग गरीबी से बाहर आए हैं।
  - उदाहरण: **वैश्वीकरण के माध्यम से चीन की तेज़ आर्थिक वृद्धि** ने गरीबी को काफी हद तक कम किया और उसकी अर्थव्यवस्था को बदल दिया, जो केवल उपभोक्ता संस्कृति से परे है।

निष्कर्षत: **उपभोक्ता संस्कृति** के अलावा वैश्वीकरण **सांस्कृतिक आदान-प्रदान, तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देता है**, वैश्विक चुनौतियों का समाधान करता है और सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित करता है। इसके बहुआयामी प्रभाव इसे केवल **उपभोक्तावाद से परे एक जटिल प्रक्रिया** बनाते हैं।

प्रश्न 11. महात्मा ज्योतिराव फुले के समाज सुधार प्रयासों और लेखन ने समाज के लगभग सभी उपेक्षित तबकों की समस्याओं को छुआ है। चर्चा कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- **प्रस्तावना:** महात्मा ज्योतिराव फुले को सामाजिक न्याय के अग्रणी के रूप में संक्षेप में प्रस्तुत कीजिये।
- **मुख्य भाग:** चर्चा कीजिये कि उनके लेखन और सुधारों ने जाति, वर्ग, महिलाओं, कृषकों एवं शिक्षा से जुड़े मुद्दों को कैसे संबोधित किया।
- **उदाहरण:** संस्थाओं, आंदोलनों और प्रकाशनों के उदाहरण दीजिये।
- **निष्कर्ष:** समावेशी समाज के निर्माण में उनके योगदान को उल्लिखित करते हुए निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: महात्मा ज्योतिराव फुले (1827-90) एक अग्रणी **समाज सुधारक और विचारक** थे, जिनके लेखन एवं सुधारात्मक पहलों ने भारत में **जातिवाद विरोधी, महिला सशक्तीकरण और कृषक उत्थान आंदोलनों** की नींव रखी। शिक्षा और तर्कशील आलोचना के माध्यम से उन्होंने सभी वंचित वर्गों को जाति, पितृसत्ता और आर्थिक शोषण की दमनकारी संरचनाओं से मुक्त करने का प्रयास किया।

- **वंचित वर्गों के मुद्दों पर लेखन**
  - **गुलामगिरी के रूप में सामाजिक विरोध:** *गुलामगिरी (1873)* में फुले ने जाति व्यवस्था की तुलना अमेरिकी गुलामी से की, दलितों एवं शूद्रों पर हो रहे संरचनात्मक उत्पीड़न को उजागर किया और उनमें आत्म-सम्मान की भावना जगाई।
  - **कृषि समालोचना के रूप में शेतकार्याचा असुद:** उनकी मौलिक कृति *शेतकार्याचा असुद (1881)* ने कृषि संकट और शोषणकारी राजस्व प्रणाली की आलोचना की, जिसमें दिखाया गया कि औपनिवेशिक नीतियों और ब्राह्मण बिचौलियों द्वारा किसानों पर दोगुना अत्याचार किया गया था।
  - **सत्य धर्म के रूप में तर्कसंगत आस्था:** *सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक* में फुले ने एक तर्कसंगत और समानतावादी आस्था की कल्पना की, धार्मिक रूढ़िवादिता को चुनौती दी और सभी समुदायों में भ्रातृत्व एवं समानता पर ज़ोर दिया।
  - **साहित्य को जागरूकता का साधन बनाना:** *तृतीय रत्न (1855)* और *शिवाजी पर पोवाडा (1869)* के माध्यम से फुले ने साहित्य का उपयोग जागरूकता पैदा करने के साधन के रूप में किया, निचली जातियों को उनके सम्मान की पुन: प्राप्ति करने और अन्याय के खिलाफ शिवाजी के संघर्ष से प्रेरणा लेने के लिये प्रेरित किया।
  - **अभिजात वर्ग की आलोचना:** उनके आलोचनात्मक लेखन ने तिलक जैसे रूढ़िवादी बुद्धिजीवियों को भी निशाना बनाया, यह उजागर करते हुए कि कैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में अक्सर उत्पीड़ित वर्गों की स्थिति की उपेक्षा की जाती थी।
- **सामाजिक सुधारों के प्रयास**
  - **शैक्षिक समावेशन:** सावित्रीबाई फुले के साथ उन्होंने **वर्ष 1848 में भारत का पहला बालिका विद्यालय** खोला, इसके बाद दलितों, शूद्रों और मज़दूरों के लिये रात्रि विद्यालय खोले, जिससे शिक्षा सीमांत वर्गों तक पहुँच सकी।
  - **महिला सशक्तीकरण:** उन्होंने **बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या तथा जबरन विधवा बनाए रखने** का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह तथा महिला शिक्षा को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया, जिससे सावित्रीबाई फुले **भारत की पहली महिला शिक्षिका** बनीं।
  - **संस्थागत सक्रियता:** उन्होंने **सत्यशोधक समाज (1873)** की स्थापना की, जिसने उत्पीड़ित जातियों को एकजुट किया, समानता का प्रचार किया और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व के खिलाफ सामूहिक प्रतिरोध का आयोजन किया।
  - **कृषक कल्याण: भूमि सुधार और आर्थिक न्याय** का समर्थन करके फुले ने उन कृषकों को सशक्त बनाने का प्रयास किया, जो गरीबी और ऋण में फँसे हुए थे।
  - **धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता:** उन्होंने **पंडिता रामाबाई के धार्मिक परिवर्तन के अधिकार** की रक्षा की, जो सभी सीमांत समुदायों के लिये समावेशिता और विवेक की स्वतंत्रता का प्रतीक है।
  - **सामुदायिक सक्रियता:** ज़मीनी स्तर की सक्रियता, नुक्कड़ नाटकों और सुधारात्मक अभियानों के माध्यम से फुले ने एक स्थायी आंदोलन का निर्माण किया, जहाँ दलित, पिछड़ी

जातियाँ, महिलाएँ और कृषक **अपने अधिकारों का दावा तथा सम्मान की मांग कर सकें।**

- **तर्कशीलता की विरासत: शिक्षा, समानता और तर्कसंगत विचार** में उनके विश्वास ने भविष्य के नेताओं, जैसे– डॉ. बी.आर. अंबेडकर को प्रेरित किया और भारत के संवैधानिक मूल्यों के लिये बौद्धिक आधार तैयार किया।

निष्कर्षत: **शक्तिशाली लेखन** को **ज़मीनी स्तर के सुधारों** के साथ जोड़कर महात्मा फुले ने वंचित वर्गों के संघर्ष को समानता और सम्मान के आंदोलन में बदल दिया। शिक्षा, सामाजिक न्याय और तर्कशीलता के उनके दृष्टिकोण ने **समावेशी एवं लोकतांत्रिक भारत** के निर्माण की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को प्रेरित करना जारी रखा।

प्रश्न 12. राज्यतंत्र, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विषय में आज़ादी के प्रारंभिक काल में भारत के सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को रेखांकित कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- स्वतंत्रता-पश्चात् एकीकरण की चुनौतियों का संक्षेप में परिचय दीजिये।
- राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अंतर्गत एकीकरण पर अलग-अलग चर्चा कीजिये।
- उदाहरणों, समितियों, संस्थाओं और नीतियों का प्रयोग कीजिये।
- आधुनिक भारत की नींव रखने में इसके महत्त्व के साथ निष्कर्ष दीजिये।

उत्तर: वर्ष 1947 में भारत विशाल चुनौतियों के बीच स्वतंत्र हुआ—**साक्षरता दर 18.3% (जनगणना 1951), औसत जीवन प्रत्याशा 32 वर्ष** और **60% से अधिक जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे (योजना आयोग) थी।** **500 रियासतों** को एकीकृत करने और **14 मिलियन शरणार्थियों** को पुनर्वासित करने के साथ-साथ भारत ने **शासन, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों** में मज़बूत नींव के माध्यम से अपने आपको सुदृढ़ किया।

- एकीकरण और लोकतंत्र के माध्यम से राजनीतिक सुदृढ़ीकरण हासिल किया गया।
  - **राज्यों का एकीकरण:** 500 से अधिक रियासतों को सरदार पटेल और वी.पी. मेनन द्वारा एकीकृत किया गया, जिससे क्षेत्रीय एकता सुनिश्चित हुई और दीर्घकालिक राजनीतिक स्थिरता मिली।
  - **संवैधानिक ढाँचा:** वर्ष 1950 का संविधान मौलिक अधिकार प्रदान करता है और एक संघीय लोकतंत्र स्थापित करता है, जिसने विभाजित समाज में नागरिकों को सम्मान और समानता दी।
  - **सार्वभौमिक मताधिकार:** भारत ने पहले चुनाव से ही वयस्क मताधिकार लागू किया, जिससे लोकतांत्रिक भागीदारी को गहरा बनाया गया और समावेशिता के लिये वैश्विक मानक स्थापित हुआ।
  - **भाषायी पुनर्गठन:** 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने भाषायी आधार पर राज्यों का निर्माण किया, जिससे क्षेत्रीय असंतोष कम हुआ और संघीय ढाँचे को मज़बूती मिली।
  - **नियमित चुनाव:** 1952 के सामान्य चुनाव सुचारु रूप से आयोजित हुए, जिससे संस्थागत विश्वसनीयता बढ़ी और लोकतांत्रिक संस्कृति मज़बूत हुई।
- **आर्थिक सुदृढ़ीकरण को योजना और राज्य-आधारित विकास के माध्यम से आगे बढ़ाया गया।**
  - **मिश्रित अर्थव्यवस्था:** भारत ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का संतुलन अपनाया, जिससे स्थिरता बनी और उपनिवेशी आर्थिक संरचनाओं पर निर्भरता कम हुई।
  - **योजना प्रणाली: योजना आयोग (1950)** ने पंचवर्षीय योजनाएँ शुरू कीं, जिन्होंने दीर्घकालिक दृष्टिकोण को संस्थागत किया और विकासात्मक रणनीतियों का समन्वय सुनिश्चित किया।
  - **कृषि को प्राथमिकता: पहली योजना (1951-56)** में 44% निधि कृषि और सिंचाई में निवेश की गई, जिससे खाद्य संकट और ग्रामीण समस्याओं का समाधान हुआ।
  - **औद्योगिक विस्तार: दूसरी योजना (1956-61)** ने भारी उद्योगों का विकास किया, जिससे आत्मनिर्भरता मज़बूत हुई और औद्योगीकरण की नींव रखी गई।
  - **ग्रामीण पहल:** सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1952) और भूमि सुधार ने समानता सुनिश्चित करने का प्रयास किया, जिससे कृषकों को सशक्त किया गया और कृषि असमानता को कम करने का प्रयास हुआ।
  - **सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम:** इस्पात कारखाने, बांध और विद्युत परियोजनाएँ स्थापित की गईं, जिससे संप्रभुता को बढ़ावा मिला और विकास के लिये बुनियादी ढाँचा विस्तारित हुआ।

- **शैक्षिक एकीकरण ने मानव संसाधन की नींव रखी।**
  - **नीति आयोग: विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) और माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने** सुधारों को आकार दिया, जिससे शिक्षा को आधुनिक बनाया गया और नीतिगत दिशा निर्धारित हुई।
  - **उत्कृष्टता संस्थाएँ:** आईआईटी खड़गपुर (1951) और ए.आई.आई.एम.एस. (1956) की स्थापना की गई, जिससे तकनीकी क्षमता बढ़ी और वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहन मिला।
  - **साक्षरता में वृद्धि:** साक्षरता दर 1951 में 18.3% से बढ़कर 1961 में 28% हो गई, जो क्रमिक लेकिन महत्त्वपूर्ण मानव विकास को दर्शाती है।
  - **क्षमता विस्तार:** स्कूल और कॉलेज तेज़ी से फैले, जिससे राष्ट्र-निर्माण के लिये कुशल मानव संसाधन तैयार हुआ और सामाजिक गतिशीलता को समर्थन मिला।
- **अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण गुटनिरपेक्षता और शांति द्वारा निर्देशित था।**
  - **स्वतंत्र नीति:** नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को बढ़ावा दिया, जिसने शीतयुद्ध के दौरान स्वायत्तता को संरक्षित किया और भारत को एक स्वतंत्र वैश्विक पहचान दी।
  - **वैश्विक भूमिका:** भारत ने एशियाई संबंध सम्मेलन (1947) की मेज़बानी की और बांडुंग सम्मेलन (1955) का नेतृत्व किया, जिसने उपनिवेश-मुक्त राष्ट्रों के साथ एकजुटता का निर्माण किया।
  - **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व:** पंचशील समझौता (1954) ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया, जिससे भारत की नैतिक प्रतिष्ठा बढ़ी, हालाँकि बाद में संघर्षों के कारण यह तनावपूर्ण हो गया।
  - **उपनिवेशवाद-विरोधी समर्थन:** भारत ने एशिया और अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों का समर्थन किया, जिससे न्याय के समर्थक के रूप में उसकी विश्वसनीयता बढ़ी।
  - **संतुलित संबंध:** भारत ने अमेरिका और सोवियत संघ, दोनों के साथ संबंध बनाए, जिससे सहायता एवं प्रौद्योगिकी प्राप्त हुई और रणनीतिक स्वतंत्रता बनी रही।

निष्कर्षत: स्वतंत्रता के शुरुआती दौर में राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भारत के सुदृढ़ीकरण ने **लोकतंत्र, नियोजित विकास, मानव पूंजी निर्माण और स्वतंत्र विदेश नीति** की नींव रखी। इन उपायों ने भारत को कठिन चुनौतियों का सामना करने और एक **स्थिर, समावेशी एवं विश्व स्तर पर सम्मानित राष्ट्र** के रूप में उभरने में सक्षम बनाया।

प्रश्न 13. समकालीन विश्व के लिये फ्राँसीसी क्रांति की निरंतर प्रासंगिकता है। स्पष्ट कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- फ्राँसीसी क्रांति और उसके मूल सिद्धांतों का परिचय दीजिये।
- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिये।
- भारत और विश्व के संस्थानों के उदाहरणों से इसे प्रमाणित कीजिये।
- इसके दीर्घकालिक प्रभाव पर संतुलित दृष्टिकोण के साथ निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: 1789 की फ्राँसीसी क्रांति का समय विश्व इतिहास में एक निर्णायक क्षण था जिसने पुरानी व्यवस्था (1789 से पहले फ्राँस की राजनीतिक और सामाजिक प्रणाली) को समाप्त कर दिया और **स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व** के आदर्शों को लोकप्रिय बनाया। इसने राजनीतिक विचार, सामाजिक व्यवस्था और शासन को महाद्वीपों में पुन: आकार दिया। दो सदी से अधिक समय बीत जाने के बाद भी इसके सिद्धांत आज भी **आधुनिक लोकतंत्र, सामाजिक न्याय आंदोलन और संवैधानिक ढाँचे** को प्रेरित करते रहते हैं, जिसमें भारत भी शामिल है।

- **लोकतांत्रिक सिद्धांत:** क्रांति ने **जनता की संप्रभुता** और जनप्रतिनिधित्व की घोषणा की, जिसने यूरोप, लैटिन अमेरिका और एशिया में बाद की क्रांतियों को प्रभावित किया।
  - ये विचार आज भी **प्रतिनिधि लोकतंत्रों** में केंद्रीय हैं, जिनमें भारत की संसदीय प्रणाली भी शामिल है।
- **विधि का शासन और मानवाधिकार: मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा (1789)** आधुनिक अधिकार चार्टरों की पूर्वधारणा बन गई।
  - इसका प्रभाव **मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948)** और भारत के **मूल अधिकारों (अनुच्छेद 14-32)** में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- **विधि के समक्ष समानता:** सामंती श्रेणियों और विशेषाधिकारों को समाप्त करके क्रांति ने कानूनी समानता को संस्थागत रूप दिया।

- यह सिद्धांत आधुनिक संविधान का आधार है, जिसमें भारत का **अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता)** और ऐतिहासिक अन्याय को कम करने के लिये आरक्षण नीतियाँ शामिल हैं।

- **पंथनिरपेक्षता:** क्रांति ने पादरी प्रभुत्व को सीमित किया और **अंत:करण की स्वतंत्रता** पर ज़ोर दिया, जिससे धर्मनिरपेक्ष राज्यों की नींव रखी गई।
  - भारत का **पंथनिरपेक्ष लोकतंत्र** और **अनुच्छेद 25-28** के तहत संवैधानिक अधिकार इस विरासत के साथ गहराई से जुड़ते हैं।
- **सामाजिक न्याय आंदोलन:** दासिता, महिलाओं के अधिकार और समानता पर क्रांतिकारी चर्चाओं ने वैश्विक संघर्षों को प्रेरित किया। हैतीयन क्रांति (1791)–विश्व की पहली सफल दासिता विरोधी क्रांति–ने फ्राँसीसी आदर्शों से प्रेरणा ली।
  - इसी तरह, भारत में **जाति उत्पीड़न, अस्पृश्यता और लैंगिक असमानता** के विरुद्ध आंदोलन भी सामाजिक मुक्ति की उसी भावना को दर्शाते हैं।
- **राष्ट्र-राज्य का निर्माण:** क्रांति ने एकीकृत राष्ट्र-राज्य की अवधारणा को बढ़ावा दिया, जिससे 19वीं सदी में **जर्मनी और इटली** में राष्ट्रवादी आंदोलनों और बाद में एशिया और अफ्रीका में उपनिवेश विरोधी संघर्षों को गति मिली।
  - भारत के स्वतंत्रता संग्राम को भी इन राष्ट्रवादी आदर्शों से प्रेरणा मिली।
- **आर्थिक सुधार:** सामंती करों और गिल्ड प्रतिबंधों की समाप्ति ने **बाज़ार सुधारों और भूमि पुनर्वितरण** को बढ़ावा दिया, जो आधुनिक आर्थिक प्रणालियों के अभिन्न तत्त्व हैं।
  - आज के **भूमि सुधार, कल्याणकारी राज्य और पुनर्वितरण नीतियाँ** समानता के समान उद्देश्यों को प्रतिबिंबित करती हैं।
- **वैश्विक संस्थाएँ और समकालीन प्रासंगिकता:** क्रांति के मूल्यों ने **संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार विधि** और **सतत् विकास लक्ष्यों (SDG)** की नींव रखी।
  - **अरब स्प्रिंग से लेकर जलवायु न्याय आंदोलनों** तक गरिमा, अधिकार और समानता की मांग आज भी क्रांतिकारी आदर्शों को दर्शाती है।

निष्कर्ष:

फ्राँसीसी क्रांति केवल फ्राँस की घटना नहीं थी, बल्कि यह एक वैश्विक परिवर्तनकारी क्षण था जिसने शासन, अधिकार और न्याय की धारणाओं को स्थायी रूप से बदल दिया। इसकी दीर्घकालिक प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि यह लोगों को उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज़ उठाने और समावेशी समाज की मांग करने के लिये सार्वभौमिक सिद्धांत प्रदान करती है। भारत और विश्व के लिये यह क्रांति स्वतंत्रता और समानता का प्रकाशस्तंभ (Beacon of Liberty and Equality) होने के साथ-साथ यह याद दिलाती है कि कट्टर परिवर्तन को स्थिरता के साथ संतुलित करना आवश्यक है।

प्रश्न 14. विश्व के अपतटीय तेल भंडारों के वितरण का भौगोलिक स्पष्टीकरण दीजिये। वे तटवर्ती तेल भंडारों से किस प्रकार भिन्न हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- तेल भंडारों और उनके वैश्विक महत्त्व के संबंध में संक्षिप्त जानकारी दीजिये।
- उदाहरण देकर अपतटीय भंडारों के भौगोलिक वितरण को स्पष्ट कीजिये।
- अपतटीय और तटवर्ती तेल भंडारों की तुलना उनके मुख्य अंतरों के साथ कीजिये।
- उनके महत्त्व पर एक संतुलित कथन के साथ निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: पेट्रोलियम संसाधन विश्व भर में असमान रूप से वितरित हैं, जो मुख्यत: समुद्री परिस्थितियों में बने **तलछटी बेसिनों/घाटियों** में केंद्रित हैं। तकनीकी प्रगति के साथ महाद्वीपीय शेल्फ/मग्नतट और उथले समुद्रों के नीचे स्थित **अपतटीय तेल भंडार** वैश्विक आपूर्ति के प्रमुख योगदानकर्त्ता बन गए हैं और इनमें विश्व के भारी तेल भंडार का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा निहित है। इनका वितरण और अस्तित्व **तटवर्ती भंडारों** से काफी भिन्न होता है, जो ऊर्जा भू-राजनीति को आकार देता है।

- **अपतटीय तेल भंडारों का भौगोलिक वितरण**
  - **मध्य पूर्व और फारस की खाड़ी: सऊदी अरब (सफानिया), ईरान, कतर और UAE** के अपतटीय क्षेत्र कम लागत वाले उथले जल भंडारों के साथ वैश्विक आपूर्ति पर प्रभुत्व रखते हैं।
  - **उत्तरी सागर बेसिन (यूरोप): ब्रिटेन और नॉर्वे** (जैसे– ब्रेंट फील्ड) के अपतटीय भंडार 1970 के दशक से यूरोप में ऊर्जा आपूर्ति के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहे हैं।
  - **पश्चिम अफ्रीका (अटलांटिक मार्जिन): नाइजीरिया और अंगोला** जैसे देशों के गहरे समुद्री भंडार उच्च-गुणवत्ता

वाले स्वीट क्रूड का उत्पादन करते हैं, जो मुख्यत: निर्यात के लिये है।

- **लैटिन अमेरिका: ब्राज़ील के सैंटोस और कैंपोस प्री-सॉल्ट बेसिन** विश्व के सबसे बड़े गहरे समुद्री भंडारों में से हैं, वहीं **वेनेजुएला का ओरिनोको डेल्टा** इस क्षेत्र की स्थिति को और मज़बूत करता है।
- **उत्तर अमेरिका: मेक्सिको की खाड़ी** (अमेरिका, मेक्सिको) गहरे समुद्री क्षेत्रों में उन्नत तकनीक के साथ महत्त्वपूर्ण मात्रा में अपतटीय तेल का उत्पादन करती है।
- **रूस तथा आर्कटिक:** कैस्पियन सागर (कशागन) और सखालिन बेसिन के भंडार प्रमुख हैं, हालाँकि आर्कटिक अपतटीय अन्वेषण तकनीकी और पारिस्थितिकीय चुनौतियों का सामना करता है।
- **एशिया-प्रशांत: दक्षिण चीन सागर, पूर्वी चीन सागर और भारतीय बेसिनों (मुंबई हाई, KG-D6)** के अपतटीय भंडार क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा में रणनीतिक योगदान देते हैं।

- **अपतटीय (Offshore) और तटवर्ती (Onshore) तेल भंडारों के बीच अंतर**

पहलू	अपतटीय तेल भंडार	तटवर्ती तेल भंडार
भौगोलिक स्थिति	**महाद्वीपीय शेल्फ/मग्नतट और उथले/गहरे समुद्र** के तल में पाए जाते हैं	भूमि पर स्थित **तटवर्ती तलछटी बेसिनों/घाटियों** में पाए जाते हैं।
उत्खनन तकनीक	समुद्री परिस्थितियों के कारण **ड्रिलिंग रिग, समुद्र-तल पाइपलाइन और फ्लोटिंग प्लेटफॉर्म** की आवश्यकता	**पारंपरिक रिग, सतही कुएँ और द्वितीयक रिकवरी विधियों** का उपयोग
लागत एवं तकनीक	**उच्च लागत एवं तकनीकी रूप से जटिल,** सिस्मिक सर्वेक्षण और गहरे समुद्र में ड्रिलिंग आवश्यक	**अपेक्षाकृत किफायती और सरल,** हालाँकि परिपक्व/मेच्योर बेसिनों में उन्नत रिकवरी आवश्यक
वैश्विक उत्पादन हिस्सेदारी	**वैश्विक उत्पादन का लगभग 30%** योगदान (IEA, 2022)	**लगभग 70% वैश्विक उत्पादन** पर प्रभुत्व
जोखिम एवं पर्यावरण	**तेल रिसाव, समुद्री क्षति और तूफानों** का जोखिम (जैसे– डीपवॉटर होराइज़न, 2010)	**भूमि क्षरण, भूजल प्रदूषण और समुदायों के विस्थापन** का जोखिम
भू-राजनीतिक आयाम	**अक्सर विवादित समुद्री क्षेत्रों** में स्थित (जैसे– दक्षिण चीन सागर, पूर्वी भूमध्यसागर)	मुख्यत: **राष्ट्रीय सीमाओं** के भीतर, जिससे शासन आसान

निष्कर्ष

अपतटीय तेल भंडारों का भूगोल उनकी उपलब्धता को **महाद्वीपीय मार्जिन** एवं **टेक्टोनिक शेल्फों** में दर्शाता है- फारस की खाड़ी से लेकर ब्राज़ील, मेक्सिको की खाड़ी और उत्तरी सागर तक। अपतटीय भंडार **स्थान, तकनीक, लागत, जोखिम और भू-राजनीतिक संवेदनशीलता** के मामले में स्थलीय भंडारों से भिन्न हैं किंतु दोनों ही वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिये अनिवार्य हैं। जैसे-जैसे स्थलीय भंडार परिपक्व/मेच्योर हो रहे हैं, **तेल का भविष्य अपतटीय अन्वेषण पर अधिक निर्भर होता जा रहा** है, जिसे सततता और पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों के साथ संतुलित करना आवश्यक है।

प्रश्न 15. स्थानीय और क्षेत्रीय योजना बनाने में जी.आई.एस. और आर.एस. तकनीकों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) और ड्रोन का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जा सकता है? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- योजना में ए.आई., ड्रोन, जी.आई.एस. और रिमोट सेंसिंग (आर.एस.) की भूमिका का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
- स्थानिक योजना और हवाई योजना में उनके प्रभावी अनुप्रयोगों को उदाहरणों के साथ समझाइये।
- इन उपकरणों के एकीकरण के रूप में उभरते हुए GeoAI की भूमिका पर प्रकाश डालिये।
- सतत् और समावेशी योजना के लिये उनकी महत्ता पर निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.), ड्रोन, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) और रिमोट सेंसिंग (आर.एस.)** का एकीकरण आधुनिक योजना प्रक्रियाओं को रूपांतरित कर रहा है। ये मिलकर **भू-स्थानिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (GeoAI)** का निर्माण करते हैं, जो स्थानिक और हवाई योजना के लिये **डेटा संग्रहण, विश्लेषण एवं निर्णय-निर्माण** को सशक्त बनाता है। शहरी विकास से लेकर कृषि और आपदा प्रबंधन तक इनके अनुप्रयोग भारत और विश्व भर में साक्ष्य-आधारित और सतत् योजना को तेज़ी से आकार दे रहे हैं।

- **स्थानिक योजना (Locational Planning) में अनुप्रयोग**
  - **शहरी अवसंरचना:** ए.आई.-सक्षम जी.आई.एस. **भूमि उपयोग आवंटन, परिवहन कॉरिडोर और सार्वजनिक सुविधाओं** का अनुकूलन कर कुशल शहरों के निर्माण में सहायता करता है।
    - उदाहरणस्वरूप, **दिल्ली मास्टर प्लान 2041** ज़ोनिंग और विस्तार योजना हेतु जी.आई.एस. डाटासेट्स का उपयोग करता है।
  - **कृषि और भूमि उपयोग:** ए.आई. और ड्रोन के माध्यम से विश्लेषित आर.एस. इमेजरी **सटीक कृषि, मृदा मानचित्रण और सिंचाई योजना** में सहायक है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है।
    - भारत का **डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन (2021-25)** ए.आई. और ड्रोन आधारित निगरानी को प्रोत्साहित करता है।
  - **औद्योगिक और आर्थिक योजना:** जी.आई.एस. के साथ एकीकृत ए.आई. भूभाग, संसाधन वितरण और पहुँच का विश्लेषण कर **औद्योगिक क्लस्टर्स, लॉजिस्टिक्स हब और विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) की पहचान** में सहायता करता है।
    - **दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर (DMIC)** जी.आई.एस.-आधारित स्थानिक मॉडलिंग का उपयोग करता है।
  - **सार्वजनिक सेवाएँ:** भू-स्थानिक डेटा पर मशीन लर्निंग का प्रयोग **स्कूलों, अस्पतालों और आपातकालीन सेवाओं** के स्थान का अनुकूलन करता है, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान पहुँच सुनिश्चित होती है।
- **हवाई योजना (Aerial Planning) में अनुप्रयोग**
  - **आपदा प्रबंधन:** ए.आई.-संचालित ड्रोन और आर.एस. **बाढ़, चक्रवात और भूकंप के वास्तविक समय (रियल-टाइम)** में निगरानी प्रदान करते हैं।
    - **वर्ष 2018 के केरल बाढ़** के दौरान ड्रोन ने जलमग्न क्षेत्रों का मानचित्रण कर राहत कार्यों में सहायता की थी।
  - **पर्यावरणीय निगरानी:** जी.आई.एस.-आर.एस. और ड्रोन **वनोन्मूलन, आर्द्रभूमि ह्रास और तटीय अपरदन** का पता लगाते हैं, जबकि ए.आई. दीर्घकालिक प्रभावों का पूर्वानुमान करता है।
    - **राष्ट्रीय आर्द्रभूमि एटलस (National Wetland Atlas)** संरक्षण हेतु आर.एस.-जी.आई.एस. एकीकरण का उदाहरण है।
  - **परिवहन और संपर्कता:** ड्रोन और ए.आई. आधारित हवाई सर्वेक्षण **राजमार्गों, रेलवे और मेट्रो कॉरिडोर** के मार्ग निर्धारण को बेहतर बनाते हैं, जिससे पारिस्थितिकीय व्यवधान कम होता है।
    - **भारतमाला परियोजना** ऐसे भू-स्थानिक नियोजन का उपयोग करती है।
  - **स्मार्ट सिटी:** ड्रोन **शहरी क्षेत्रों के 3D मॉडल** तैयार करते हैं, जिन्हें ए.आई. और जी.आई.एस. के साथ एकीकृत कर उपयोगिताओं, जल-निकासी और ऊर्जा प्रणालियों की योजना बनाई जाती है। यह भारत की **स्मार्ट सिटीज़ मिशन** का हिस्सा है।
  - **रक्षा और सुरक्षा:** ए.आई.-सक्षम ड्रोन और आर.एस. **सीमा निगरानी तथा भूभाग विश्लेषण** को सुदृढ़ बनाते हैं, जिससे **लद्दाख और पूर्वोत्तर भारत** जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में सामरिक योजना को सहयोग मिलता है।
- **GeoAI की उभरती भूमिका**
- GeoAI ए.आई. को जी.आई.एस. और आर.एस. के साथ जोड़कर **स्थानिक प्रतिनिधित्व अधिगम (spatial representation learning), ज्ञान-आधारित मॉडल और पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण** को संभव बनाता है।
- यह **उपग्रह चित्रों में पैटर्न पहचान** को सशक्त करता है, **शहरी कंप्यूटिंग** में सहायता करता है और **पृथ्वी प्रणाली विज्ञान मॉडलिंग** में सुधार लाता है।
- चुनौतियों में GeoAI अनुप्रयोगों में **निष्पक्षता, गोपनीयता और पारदर्शिता** सुनिश्चित करना शामिल है, जो भारत की डिजिटल शासन प्रणाली में नैतिक ढाँचों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.), ड्रोन, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) तथा रिमोट सेंसिंग (आर.एस.) - **GeoAI के ढाँचे** में एकसाथ कार्य करते हुए - योजना निर्माण में क्रांति ला रहे हैं, जिससे **रियल-टाइम पर सटीक और पूर्वानुमानात्मक अंतर्दृष्टियाँ** प्राप्त हो रही हैं। भारत के संदर्भ में **कृषि, स्मार्ट शहरों, आपदा प्रबंधन और अवसंरचना नियोजन** में इनके एकीकरण से समावेशी विकास, सुदृढ़ता और स्थिरता सुनिश्चित होगी। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ GeoAI को नैतिक सुरक्षोपायों के साथ संयोजित करना इसकी विकासात्मक संभावनाओं को पूर्णतः साकार करने की मूल कुंजी होगी।

प्रश्न 16. चर्चा कीजिये कि ग्रह के महाद्वीपों और महासागरीय बेसिनों के आकार और माप (साइज़) में, क्रस्टल द्रव्यमानों की टेक्टोनिक गतिविधियों के कारण, परिवर्तन कैसे होते हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- टेक्टोनिक गतिविधियों और महाद्वीपों एवं महासागर बेसिन को आकार देने में उनके महत्त्व को बताइये।
- अल्फ्रेड वेगनर के महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत और आधुनिक प्लेट टेक्टोनिक के संदर्भ में इसे समझाइये।
- प्लेट विस्थापन (जैसे – महासागर बेसिन का विस्तार) और प्लेट अभिसरण (जैसे – पहाड़ों का निर्माण) कैसे होता है? इसकी विवेचना कीजिये।
- भू-पृष्ठ पर टेक्टोनिक गतिविधियों के प्रभाव और प्राकृतिक आपदाओं से उनके संबंध की चर्चा करते हुए निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: भू-पर्पटी द्रव्यमानों की टेक्टोनिक गतिविधियाँ भू-पृष्ठ को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, विशेषकर महाद्वीपों और महासागरीय बेसिनों के निर्माण तथा परिवर्तन में। ये गतिविधियाँ **टेक्टोनिक प्लेटों के खिसकने** का परिणाम हैं, जो **मेंटल संवहन, स्लैब पुल और रिज़ पुश** जैसे बलों के कारण होते हैं। इन प्लेटों के बीच परस्पर क्रियाएँ भूभागों और महासागरीय तल के पुनर्विन्यास का कारण बनती हैं, जिसके परिणामस्वरूप **महाद्वीपीय विस्थापन, पर्वत निर्माण** तथा **महासागरीय बेसिनों** का विस्तार या संकुचन जैसी घटनाएँ देखने को मिलती हैं।

- **महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत और इसका विकास:**
  - महाद्वीपीय विस्थापन की अवधारणा सर्वप्रथम **अल्फ्रेड वेगनर ने वर्ष 1912** में प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने सुझाव दिया कि महाद्वीप कभी **"पैंजिया"** (Pangaea) नामक एक ही भूभाग का हिस्सा थे।
  - उनका यह सिद्धांत आधुनिक प्लेट टेक्टोनिक की नींव बना, जिसे वर्ष 1960 के दशक में वैज्ञानिकों, जैसे–हैरी हेस और रॉबर्ट डिट्ज़ ने और विकसित किया। **सागर नितल प्रसरण** (seafloor spreading) और महासागरीय रिजों/कटकों का मानचित्रण इस सिद्धांत का समर्थन करने वाले महत्त्वपूर्ण प्रमाण प्रदान करते हैं।
- **प्लेट टेक्टोनिक और भूपर्पटी विरूपण:**
  - टेक्टोनिक प्लेट संचलन **भूपर्पटी विरूपण** का कारण है। **मध्य महासागरीय कटकों** पर प्लेट अपसरण महासागरीय बेसिनों के विस्तार का कारण है, हालाँकि प्लेट अभिसरण पर्वतों और महासागरीय गर्तों के निर्माण में योगदान देता है। उदाहरण के लिये **भारतीय प्लेट का यूरेशियाई प्लेट से टकराना हिमालय के निर्माण** का कारण बना।
  - इसी प्रकार, अटलांटिक महासागर का विस्तार हो रहा है क्योंकि अमेरिकी और यूरोपीय प्लेटें दूर जा रही हैं। अपसरण क्षेत्र (subduction zones), जहाँ एक प्लेट दूसरी के नीचे धँसती है, महासागरीय बेसिनों के संकुचन और ज्वालामुखीय चापों (volcanic arcs) के निर्माण में योगदान देते हैं।

निष्कर्ष

प्लेटों की निरंतर गति भू-पृष्ठ को आकार देने में मूल भूमिका निभाती है। ये गतिविधियाँ न केवल महाद्वीपों और महासागरीय बेसिनों की वर्तमान संरचना को समझने में सहायता करती हैं, बल्कि भूकंप और ज्वालामुखी प्रस्फुटन जैसी **प्राकृतिक आपदाओं को समझने में भी महत्त्वपूर्ण** हैं। प्लेट संचलन के परिणामों की बेहतर भविष्यवाणी के लिये निरंतर अनुसंधान और निगरानी आवश्यक है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जो भूकंपीय गतिविधियों के प्रति संवेदनशील हैं।

प्रश्न 17. भूमि, मिट्टी और जल संसाधनों के विशेष संदर्भ के साथ गंगा नदी बेसिन में जनसंख्या वितरण और घनत्व पर चर्चा कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- गंगा नदी बेसिन का जनसंख्या घनत्व और संसाधनों की उपलब्धता के संदर्भ में महत्त्व बताइये।
- उच्च जनसंख्या घनत्व को बनाए रखने में उपजाऊ भूमि और जल संसाधनों की भूमिका पर चर्चा कीजिये।
- संसाधनों पर प्रभाव डालने वाले भूमि अपरदन, मृदा अपरदन और जल प्रदूषण जैसी चुनौतियों पर प्रकाश डालिये।
- जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन के लिये सतत् संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: गंगा नदी घाटी/बेसिन, 11 राज्यों में विस्तृत, एक सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है, जो अपनी उपजाऊ भूमि, प्रचुर जल संसाधनों और **सभ्यता तथा कृषि के विकास स्थल** के रूप में अपने ऐतिहासिक महत्त्व के लिये जाना जाता है। इस बेसिन में जनसंख्या वितरण और घनत्व भूमि, मृदा और जल संसाधनों की उपलब्धता तथा उनके उपयोग पर निर्भर करता है।

- **जनसंख्या वितरण और घनत्व:** गंगा नदी घाटी/बेसिन भारत के **भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 26%** हिस्सा कवर करती है, लेकिन यह देश की 40% से अधिक जनसंख्या का पोषण करती है। इसका परिणाम अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या घनत्व के रूप में देखा जाता है, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार के ऊपरी और मध्य गंगा मैदानों में। जनसंख्या का यह घनत्व मुख्यत: उन क्षेत्रों में केंद्रित है जहाँ कृषि गतिविधियाँ तीव्र हैं, क्योंकि भूमि अत्यंत उपजाऊ है। घाटी का कृषि केंद्र के रूप में महत्त्व **विभिन्न शहरी केंद्रों** के विकास का कारण बना, जिसने इन क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि को और बढ़ावा दिया है।
- **भूमि संसाधन:** गंगा नदी घाटी **उपजाऊ जलोढ़ मृदा** (alluvial soil) से समृद्ध है, जो तीव्र उगने वाली कृषि को समर्थन देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। घाटी की भूमि **मुख्यत: समतल** है और इसमें गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए गहरे जलोढ़ निक्षेप शामिल हैं। ये विशेषताएँ भूमि को अत्यंत उपजाऊ बनाती हैं, जिससे कई फसल चक्र देखने को मिलते हैं और बड़ी ग्रामीण जनसंख्या का भरण-पोषण संभव होता है। हालाँकि **शहरीकरण, भूमि का रूपांतरण और कृषि उद्देश्यों के लिये अति-उपयोग** ने भूमि अपरदन में योगदान दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता कम हो गई है, विशेष रूप से सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में।
- **मृदा संसाधन:** गंगा नदी घाटी की मृदा मुख्यत: जलोढ़ है, जो अत्यंत उपजाऊ है और विभिन्न प्रकार की फसलों का समर्थन करती है। हालाँकि, **उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, तीव्र कृषि और उचित फसल चक्र** की कमी के कारण मृदा में पोषक तत्त्वों की कमी और अपरदन हो रहा है। वनावरण की कमी और शहरी विस्तार के साथ मिलकर मृदा की उपजाऊ क्षमता को और भी कम कर रही हैं, जिससे बढ़ती जनसंख्या की कृषि आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो गया है।
- **जल संसाधन:** गंगा नदी घाटी में सिंचाई, घरेलू उपयोग और औद्योगिक गतिविधियों के लिये आवश्यक जल संसाधन गंगा नदी द्वारा प्रदान किये जाते हैं। नदी का निरंतर प्रवाह संपूर्ण वर्ष जल की सतत् आपूर्ति सुनिश्चित करता है। हालाँकि **घरेलू सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट** और कृषि जल प्रवाह से प्रदूषण ने जल की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, जल प्रवाह में मौसमी असमानता, विशेष रूप से शुष्क अवधि के दौरान, विभिन्न उपयोगों के लिये जल की उपलब्धता को प्रभावित करती है।

निष्कर्ष

गंगा नदी घाटी में उच्च जनसंख्या घनत्व सीधे इसकी **श्रेष्ठ भूमि, मृदा और जल संसाधनों** से संबंधित है। भविष्य की चुनौती इस जनसंख्या-संसाधन समीकरण का सतत् प्रबंधन करना है। इसके लिये समग्र घाटी प्रबंधन आवश्यक है, जैसा कि विशेषज्ञ समितियों, जैसे कि **मिहिर शाह समिति** द्वारा सुझाया गया है, ताकि स्वच्छ पर्यावरण **(अनुच्छेद 48A और अनुच्छेद 21)** का संवैधानिक दायित्व सुनिश्चित किया जा सके और इस महत्त्वपूर्ण नदी प्रणाली पर निर्भर लाखों लोगों के आजीविका साधनों का समर्थन किया जा सके। **नमामि गंगे** जैसी योजनाएँ इन मुद्दों को हल करने के लिये **नदी पुनरुज्जीवन, संधारणीय कृषि और जल संरक्षण** पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

प्रश्न 18. आधुनिक समाज में स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ बढ़ने के बावजूद फास्ट फूड उद्योग बढ़ रहे हैं, आप इसको कैसे देखते हैं? भारतीय अनुभव से अपने उत्तर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण

- स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बीच फास्ट फूड उद्योग/इंडस्ट्री की बढ़ती लोकप्रियता के संबंध में जानकारी दीजिये, विशेषकर भारत में।
- विकास को बढ़ावा देने वाले कारकों पर प्रकाश डालिये: शहरीकरण, व्यस्त जीवनशैली, मार्केटिंग, किफायती कीमतें और सामाजिक रुझान।
- मोटापा जैसी स्वास्थ्य समस्याओं और अस्वास्थ्यकर भोजन की खपत को रोकने के लिये नियामक उपायों की विवेचना कीजिये।
- स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन विकल्पों को बढ़ावा देने वाली संतुलित नीतियों की आवश्यकता के साथ निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: स्वास्थ्य संबंधी बढ़ती चिंताओं के बावजूद फास्ट फूड उद्योग/इंडस्ट्री की विरोधाभासी वृद्धि आर्थिक, सामाजिक और बाज़ारिक शक्तियों की जटिल अंत:क्रिया द्वारा प्रेरित होती है और भारतीय अनुभव इस वैश्विक प्रवृत्ति का एक प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत करता है।

- भारत में, आर्थिक उदारीकरण ने वैश्विक फास्ट फूड दिग्गजों के लिये मार्ग प्रशस्त किया, जिससे शहरी खाद्य परिदृश्य में परिवर्तन आया। उनके विकास के कई कारण हैं:
  - **शहरीकरण और व्यस्त जीवनशैली:** बढ़ती उपलब्ध आय, दोहरे-कॅरियर वाले परिवार (dual-career households) और समय की कमी फास्ट फूड को एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं।
  - **आक्रामक मार्केटिंग:** लक्षित विज्ञापन, विशेष रूप से युवाओं और बच्चों को ध्यान में रखकर और एक **'मज़ेदार' डाइनिंग अनुभव** का निर्माण ब्रांड के प्रति प्रबल निष्ठा विकसित करता है।
  - **किफायती कीमत तथा मूल्य प्रस्ताव:** प्रतिस्पर्द्धी मूल्य निर्धारण, **कॉम्बो मील** और छूट इन विकल्पों को मध्यम वर्ग के लिये आकर्षक बनाते हैं।
  - **परिवर्तनशील सामाजिक पैटर्न:** फास्ट फूड आउटलेट **युवाओं के लिये सामाजिक केंद्र** बन गए हैं, जो आधुनिक और वैश्विक जीवनशैली का प्रतीक हैं।
- यह विस्तार **मोटापा, मधुमेह और हृदय रोगों से जुड़े अच्छी तरह प्रलेखित संबंधों/लिंक** के बावजूद जारी है। अध्ययन दर्शाते हैं कि शहरी भारत में बच्चों में मोटापे की दर पिछले दशक में फास्ट फूड की बढ़ती खपत के कारण दोगुनी हो गई है।
- अस्वस्थ आहार की खपत से उत्पन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती को पहचानते हुए उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये नियामक उपाय लागू किये गए हैं:
  - **खाद्य सुरक्षा और मानक (विज्ञापन और दावे) विनियम, 2018:** भ्रामक खाद्य विज्ञापनों को रोकने के उद्देश्य से।
  - **ड्राफ्ट फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग (FOPL) नियम:** ये नियम उपभोक्ताओं को उच्च वसा, शर्करा और नमक (HFSS) वाले उत्पादों की आसानी से पहचान करने में सहायता करने के लिये बनाए गए हैं।
  - **राष्ट्रीय पोषण नीति (1993):** संपूर्ण जनसंख्या में स्वस्थ भोजन की आदतों को बढ़ावा देने का समर्थन करती है।
  - **अनुशंसाएँ:**
    - **स्वरूप समिति (2013):** स्कूल परिवेश में जंक फूड को नियंत्रित करने और स्पष्ट पोषण लेबलिंग के महत्त्व पर ज़ोर दिया।
    - **शर्मा समिति (2014):** समय-समय पर निगरानी, जनता में जागरूकता बढ़ाने और खाद्य विज्ञापनों पर कड़े नियंत्रण लागू करने की अनुशंसा की।
    - **राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग (2000):** आहार-संबंधित गैर-संक्रामक रोगों (NCD), विशेष रूप से फास्ट फूड खपत से जुड़े रोगों को संबोधित करने की आवश्यकता को उजागर किया।
- ये पहलें और अनुशंसाएँ सभी नागरिकों के लिये एक स्वस्थ खाद्य परिवेश बनाने का लक्ष्य रखती हैं।

निष्कर्ष

उद्योग की वृद्धि आधुनिक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का सफलतापूर्वक लाभ उठाने वाले बाज़ार को उजागर करती है। इस वृद्धि को सार्वजनिक स्वास्थ्य के साथ संतुलित करने के लिये **बहु-आयामी दृष्टिकोण** की आवश्यकता है: **FSSAI नियमों** का प्रबल क्रियान्वयन, पोषण पर प्रभावी जन-जागरूकता अभियान और वित्तीय नीतियाँ, जो उपभोक्ताओं को स्वस्थ विकल्पों की ओर प्रेरित करें, जिससे **संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत स्वास्थ्य के अधिकार** को सुनिश्चित किया जा सके।

प्रश्न 19. पर्यावरण संरक्षण पर ज़ोर देते हुए सतत् विकास हासिल करना, भारत जैसे देश में गरीब लोगों की ज़रूरतों के साथ टकराव में आ सकता है। टिप्पणी कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:
- भारत में सतत् विकास और गरीबी उन्मूलन के बीच टकराव के संबंध में बताइये।
- आर्थिक उदारीकरण के बाद के विकास और गरीबों की ज़रूरतों को पूरा करने वाले विधिक ढाँचों पर चर्चा कीजिये।
- प्रतिबंधकारी संरक्षण, नियामक लागत और पर्यावरणीय अन्याय जैसी चुनौतियों पर प्रकाश डालिये।
- दोनों लक्ष्यों के बीच संतुलन स्थापित करने हेतु समावेशी हरित विकास को समाधान के रूप में अपनाने का सुझाव देकर निष्कर्ष लिखिये।

उत्तर: सतत् विकास की खोज, जो आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखती है, वास्तव में भारत के गरीबों की तात्कालिक आवश्यकताओं के साथ एक कथित टकराव उत्पन्न कर सकती है। यह तनाव इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि **गरीब वर्ग अक्सर अपनी आजीविका के लिये प्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर** रहता है और वह **पर्यावरणीय क्षरण के प्रति सर्वाधिक असुरक्षित** भी होता है।

- **भारत की विकास-यात्रा:**
  - उदारीकरण के बाद भारत की विकास-यात्रा ने तीव्र औद्योगीकरण को प्राथमिकता दी, जो प्राय: पर्यावरणीय स्वास्थ्य की कीमत पर हुआ। इससे ऐसे टकराव उत्पन्न हुए, जहाँ संरक्षण प्रयासों को गरीबी उन्मूलन और आर्थिक विकास में बाधा के रूप में देखा गया।
  - **वन अधिकार अधिनियम, 2006** और **भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन अधिनियम, 2013** ऐसे कानूनी ढाँचे हैं जो इस समस्या को संबोधित करने का प्रयास करते हैं। ये कानून वन-निवासी समुदायों के अधिकारों को मान्यता देते हैं और उचित मुआवज़ा सुनिश्चित करते हैं।
- **समितियों की अनुशंसाएँ:**
  - **पश्चिमी घाट** पर **गाडगिल समिति (वर्ष 2011)** और **कस्तूरीरंगन समिति (वर्ष 2013)** जैसी समितियों ने इस टकराव को उजागर किया।
  - जहाँ गाडगिल समिति ने कड़े पारिस्थितिकीय संरक्षण की अनुशंसा की, वहीं कस्तूरीरंगन समिति ने स्थानीय आजीविकाओं पर प्रभाव को कम करते हुए अधिक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यह दर्शाता है कि इन लक्ष्यों का सामंजस्य स्थापित करना एक बहुआयामी चुनौती है।
- **टकराव के आयाम:**
  - **प्रतिबंधात्मक संरक्षण:** किसी क्षेत्र को संरक्षित वन या वन्यजीव अभयारण्य घोषित करने से वनों से मिलने वाले उत्पादों तक पहुँच सीमित हो सकती है, जिससे जनजातीय समुदायों की आजीविका प्रभावित होती है।
  - **विनियमों की लागत:** उद्योगों के लिये कठोर पर्यावरणीय मानक रोज़गार सृजन की गति को धीमा करने वाले माने जा सकते हैं, जिससे रोज़गार की तलाश कर रहे गरीब प्रभावित होते हैं।
  - **पर्यावरणीय अन्याय:** प्रदूषण (जैसे – औद्योगिक क्षेत्रों के पास रहना) और जलवायु परिवर्तन (जैसे – किसानों का अनियमित मानसून का सामना करना) का बोझ अक्सर गरीबों को ही उठाना पड़ता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण उनके लिये और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।
    - इसके विपरीत, पर्यावरणीय क्षरण स्वयं गरीबी को और बढ़ा देता है क्योंकि यह प्राकृतिक पूंजी (जल, मृदा, वन) को नष्ट करता है, जिन पर गरीब निर्भर रहते हैं। इसलिये, यह टकराव पूर्णत: निरपेक्ष नहीं है।

निष्कर्ष:

यह प्रतीत होने वाला टकराव वास्तव में एक **मिथ्या द्वंद्व (False Dichotomy)** है। एक क्षतिग्रस्त पर्यावरण में दीर्घकालिक गरीबी उन्मूलन असंभव है। इसका समाधान **समावेशी हरित विकास** में निहित है: संधारणीय कृषि को बढ़ावा देना, रोज़गार सृजन हेतु नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करना और **संयुक्त वन प्रबंधन** जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से संरक्षण में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करना। सतत् विकास कोई बाधा नहीं, बल्कि वास्तव में गरीबों को गरीबी से बाहर निकालने के लिये एक पूर्वापेक्षा है।

प्रश्न 20. क्या भारत में जनजातीय विकास दो धुरियों, विस्थापन और पुनर्वास, के इर्द-गिर्द केंद्रित है? अपने विचार व्यक्त कीजिये। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

हल करने का दृष्टिकोण:

- जनजातीय विकास में विस्थापन और पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करते हुए परिचय लिखिये।
- विकास परियोजनाओं के कारण हुए विस्थापन और उसके जनजातीय समुदायों पर प्रभाव पर चर्चा कीजिये।
- पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम (PESA) और वनाधिकार अधिनियम (FRA) जैसे कानूनी ढाँचों को रेखांकित कीजिये, साथ ही इनके क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों को भी उजागर कीजिये।
- सशक्तीकरण और सतत् विकास पर केंद्रित अधिकार-आधारित दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए निष्कर्ष लिखिये।

परिचय:

भारत में जनजातीय विकास की दिशा को विस्थापन और पुनर्वास की **दोहरी तथा परस्पर जुड़ी धुरी** ने गहराई से प्रभावित किया है। यद्यपि घोषित लक्ष्य विकास का रहा है, परंतु इस प्रक्रिया ने प्रायः **जनजातीय समुदायों के हाशियेकरण** को जन्म दिया है, जिससे ये दोनों मुद्दे उनके कल्याण पर होने वाली किसी भी चर्चा के केंद्र में आ जाते हैं।

- **जनजातीय समुदायों पर विस्थापन का प्रभाव:**
  - ऐतिहासिक रूप से खनिज, वनों और जल संसाधनों से समृद्ध आदिवासी क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाओं, जैसे– बाँध, खनन और उद्योगों के लिये चुना गया है।
    - इससे जनजातीय समुदायों का व्यापक स्तर पर विस्थापन हुआ है, जो भारत में विकास-जनित विस्थापितों का असमान रूप से बड़ा हिस्सा बनाते हैं।
  - यह विस्थापन केवल भौतिक नहीं है; यह उनकी भूमि **(जल, वन, ज़मीन)** से गहन सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक लगाव को खंडित कर देता है, जिससे उनकी पारंपरिक आजीविका और सामाजिक ढाँचे का विनाश होता है।
- **कानूनी ढाँचा और सुरक्षा उपाय:**
  - इस संकट को पहचानते हुए कानूनी ढाँचे ने कई सुरक्षा उपाय प्रदान किये हैं। भारतीय संविधान की **पाँचवीं** और **छठी अनुसूचियाँ** भूमि और संसाधनों पर स्वायत्तता प्रदान करती हैं।
  - **पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, 1996 (PESA) और वनाधिकार अधिनियम, 2006 (FRA)** ऐतिहासिक कानून हैं, जिनका उद्देश्य ग्राम सभाओं को संसाधनों के प्रबंधन का अधिकार देना और व्यक्तिगत तथा सामुदायिक वनाधिकारों को मान्यता प्रदान करना था।
- **क्रियान्वयन में चुनौतियाँ:**
  - हालाँकि, इन प्रावधानों का क्रियान्वयन कमज़ोर रहा है। **भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन अधिनियम, 2013** जैसी पुनर्वास नीतियाँ व्यवहार में प्रायः असफल रही हैं, जो अपर्याप्त मुआवज़ा और अस्थिर नई आजीविकाएँ प्रदान करती हैं, जिससे जनजातीय समुदायों का दारिद्रीकरण होता है।
  - जाँच समितियों में से **ज़ाक्सा समिति** (2013) ने रेखांकित किया कि विस्थापन जनजातीय वंचना का मूल कारण बना हुआ है और अनुशंसा की कि जनजातीय समुदायों को विकास परियोजनाओं में साझेदार बनाया जाए।
    - **भूरिया आयोग** (2002-04) ने भी PESA के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया।

निष्कर्ष

यद्यपि विस्थापन और पुनर्वास जनजातीय विकास विमर्श की एक महत्त्वपूर्ण धुरी हैं, यह **धुरी ऐतिहासिक अन्याय और अधूरे वादों से संबंधित** रही है। वास्तविक विकास को **अधिकार-आधारित दृष्टिकोण** की ओर अग्रसर होना चाहिये, जिसमें **स्वतंत्र, पूर्व और सूचित सहमति (FPIC)** सुनिश्चित की जाए, FRA और PESA का सशक्त क्रियान्वयन हो तथा आदिवासियों को विकास का विषय नहीं बल्कि साझेदार बनाया जाए। भविष्य की धुरी **सशक्तीकरण, स्वशासन और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप सतत् विकास** की होनी चाहिये।